रक्षा मानकी दर्पण 2021

पच्चीसवां अंक

आज़ादी का अमृत महोत्सव

रक्षा मंत्रालय

रक्षा उत्पादन विभाग

मानकीकरण निदेशालय

राजभाषा प्रतिज्ञा

भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 और 351 तथा राजभाषा संकल्प 1968 के आलोक में हम, केंद्र सरकार के कार्मिक यह प्रतिज्ञा करते हैं कि अपने उदाहरणमय नेतृत्व और निरंतर निगरानी से; अपनी प्रतिबद्धता और प्रयासों से; प्रशिक्षण और प्राइज़ से अपने साथियों में राजभाषा प्रेम की ज्योति जलाए रखेगें, उन्हें प्रेरित और प्रोत्साहित करेंगे; अपने अधीनस्थ के हितों का ध्यान रखते हुए; अपने प्रबंधन को और अधिक कुशल और प्रभावशाली बनाते हुए राजभाषा-हिंदी का प्रयोग, प्रचार और प्रसार बढ़ाएंगे। हम राजभाषा के संवर्द्धन के प्रति सदैव ऊर्जावान और निरंतर प्रयासरत रहेंगे।

जय राजभाषा! जय हिंद!

रक्षा मानकी दर्पण

2021

पच्चीसवां अंक

संरक्षक
कमोडोर गोपाल आर वाणी
निदेशक एवं अध्यक्ष राजभाषा
कार्यान्वयन समिति

मार्गदर्शन एवं परामर्श
कमल कुमार
उप निदेशक (प्रशा.)

संपादक
अनीता सिंह
सहा. निदेशक (रा.भा.)

संपादन सहयोग
शशि रंजन कुमार
विनोद कुमार
प्रदीप भगत

प्रकाशक एवं मुद्रण:-
मानकीकरण निदेशालय
कमरा संख्या- 670, 'ए' ब्लॉक
छठी मंजिल, रक्षा कार्यालय परिसर
कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली-110001

पत्रिका में प्रकाशित लेख रचनाकारों के अपने विचार हैं। लेखों में व्यक्त विचारों से सम्पादकीय सहमति आवश्यक नहीं।

मानकीकरण मुख्यालय/सेल संवर्ग के सभी पाठकों से सुझाव, टिप्पणी तथा आगामी अंक के लिए परिष्कृत रूप से एक ही ओर टंकित, मौलिक एवं अप्रकाशित रचनाएं वर्तमान पते पर जून, 2022 तक आमंत्रित हैं।

राजनाथ सिंह
RAJNATH SINGH

सत्यमेव जयते

रक्षा मंत्री
भारत
DEFENCE MINISTER
INDIA

संदेश

जैसा कि विदित है, हमारे संविधान निर्माताओं ने 14 सितंबर, 1949 को देवनागरी लिपि में लिखी जाने वाली हिंदी को भारत संघ की राजभाषा का दर्जा प्रदान किया। तब से प्रतिवर्ष 14 सितंबर का दिन 'हिंदी दिवस' के रूप में मनाया जाता है।

उल्लेखनीय है कि 15 अगस्त, 2021 को आजादी की 75वीं वर्षगांठ के अवसर पर आजादी का अमृत महोत्सव पूरे देश में जन-भागीदारी के माध्यम से मनाया जा रहा है। यह महोत्सव भारत सरकार द्वारा मनाए जाने वाले कार्यक्रमों की एक श्रृंखला है जो कि दिनांक 12 मार्च, 2021 से प्रारम्भ हो चुकी है और 15 अगस्त, 2023 तक अलग-अलग कार्यक्रमों और समारोहों के माध्यम से पूरे देश में विभिन्न प्रकार के कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। इस अमृत महोत्सव के पावन अवसर पर हिंदी दिवस का महत्व और भी अधिक बढ़ जाता है।

भारत विविधताओं वाला देश है। हमारे देश में अनेक भाषाएं बोली जाती हैं। तथापि, अपनी सरलता, सुबोधता और पहुंच के कारण हिंदी ने भारत की राजभाषा बनने का गौरव प्राप्त किया। स्वतंत्रता संग्राम के दौरान और इसके बाद हिंदी ने हमारे राष्ट्र को एकता के सूत्र में पिरोया है तथा विविधता में एकता की भावना को मजबूत बनाए रखा है।

हिंदी भारत की सबसे अधिक बोली और समझी जाने वाली भाषा है। आत्मनिर्भर भारत को लेकर सरकार द्वारा चलाई जाने वाली योजनाओं और कार्यक्रमों के लाभों के बारे में जनता को उनकी भाषा में अधिक प्रभावी ढंग से जानकारी दी जा सकती है।

मुझे यह जानकर हर्ष हो रहा है कि इस वर्ष भी रक्षा मंत्रालय, सैन्य कार्य विभाग एवं अन्य सभी रक्षा अंतर-सेवा संगठनों में हिंदी पखवाड़े का आयोजन मानक दिशा-निर्देशों का पालन करते हुए किया जा रहा है। मैं, रक्षा मंत्रालय, सैन्य कार्य विभाग एवं सभी रक्षा अंतर-सेवा संगठनों के देश भर में फैले विभिन्न कार्यालयों में कार्यरत अधिकारियों/कर्मचारियों से अपील करता हूं कि वे अपना अधिक-से-अधिक सरकारी काम-काज राजभाषा हिंदी में करते हुए संवैधानिक अपेक्षा का अनुपालन सुनिश्चित करें।

" जय हिन्द"

(राजनाथ सिंह)

स्थान: नई दिल्ली
दिनांक: 03 सितम्बर, 2021

Office : Room No. 104, Ministry of Defence, South Block, New Delhi-110011
Tel. : +91 11 23012286, +91 11 23019030, Fax : +91 11 23015403
E-mail : rmo@mod.nic.in

सत्यमेव जयते

अनुराग बाजपेई
संयुक्त सचिव

भारत सरकार
रक्षा मंत्रालय
रक्षा उत्पादन विभाग
नई दिल्ली-110 011
Government of India
Ministry of Defence
Department of Defence Production
New Delhi-110 011

संदेश

मानकीकरण निदेशालय की वार्षिक ई-हिंदी पत्रिका 'रक्षा मानकी दर्पण-2021' के 25वे अंक के प्रकाशन पर मैं आप सभी को शुभकामनाएं प्रदान करता हूं। विश्व में अनेक भाषाएं हैं। हम विश्व की किसी भी भाषा को सीख ले किंतु वह हमारी मातृभाषा का स्थान नहीं ले सकती क्योंकि मातृभाषा के साथ हमारा रिश्ता अटूट होता है। भारत में भी अनेक भाषाएं है किंतु संघ की राजभाषा का दर्जा हिंदी को ही प्रदान किया गया है क्योंकि किसी भी राष्ट्र की राजभाषा उस देश की संस्कृति का दर्पण होती है। वह अनुभूति और भावना के धरातल पर सम्पूर्ण राष्ट्र को एकता के सूत्र में पिरोती है। अतः यह हमारा दायित्व है कि हम राष्ट्रहित एवं एकता के लिए अधिकाधिक हिंदी का प्रयोग करें।

राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में हिंदी गृह-पत्रिकाओं की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। ऐसी पत्रिकाएं कार्यालय की व्यवस्था में वयस्त कार्मिकों को अपने मनोभाव व्यक्त करने का एक मंच प्रदान करती हैं जिनमें वे अपनी लेखनी के माध्यम से अपने समस्त ज्ञान-विज्ञान, भावों इत्यादि को अभिव्यक्त करते हैं। अपनी भाषा में ऐसी अभिव्यक्ति से कार्मिकों को जो संतुष्टि प्राप्त होती है उसकी तुलना ही नहीं की जा सकती।

आशा करता हूं कि सभी कार्मिकों के प्रयत्नों से 'रक्षा मानकी दर्पण' राजभाषा के संवर्धन में अपना पूरा योगदान देगी।

जय हिंद!

अनुराग बाजपेई

(अनुराग बाजपेई)

नई दिल्ली
3 जनवरी, 2022

कमोडोर गोपाल आर वाणी
निदेशक
एनसीबी इंडिया

भारत सरकार, रक्षा मंत्रालय
मानकीकरण निदेशालय
कमरा संख्या – 601, 'ए' ब्लॉक
रक्षा कार्यालय परिसर (गेट सं. 2)
के जी मार्ग, नई दिल्ली – 110 001

सत्यमेव जयते

Cmde Gopal R Wani
Director
NCB India

दूरभाष / Tele : 011- 2307- 2264
फैक्स / Fax : 011 -2307- 5686
ई.मेल / E – mail: director.defstand@gov.in

Government of India
Ministry of Defence
Dte of Standardisation
R No. 601, 'A' Block,
Defence Offices Complex (Gate No. 2)
KG Marg, New Delhi – 110 001

निदेशक की कलम से

हमारे कार्यालय की वार्षिक हिंदी ई-गृह-पत्रिका 'रक्षा मानकी दर्पण-2021' के 25वें अंक के प्रकाशन पर मैं समस्त कार्मिकों को बधाई देता हूं।

हिंदी अभिव्यक्ति ही नहीं अपितु सभ्यता व संस्कृति की भी परिचायक है। भाषा का जनता के साथ जितना संपर्क होता है वह उतनी ही विकसित व समृद्ध होती है।

भारतीय संविधान में हिंदी को राजभाषा का दर्जा दिया गया है। अतः अपना अधिकाधिक कामकाज हिंदी में करना हम सब का संवैधानिक दायित्व है। हिंदी को बढ़ावा देने के लिए भारत सरकार द्वारा काफी प्रयास किए जा रहे हैं। हिंदी गृह-पत्रिकाओं का प्रकाशन इस दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में आप सभी अपने मौलिक और सृजनात्मक लेखों, कहानियों, कविताओं इत्यादि के माध्यम से महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। आज की इस महामारी के दौर में, मैं आप सबकी दृढ़ इच्छाशक्ति व स्वः से पहले अपने कार्य को प्राथमिकता देने की भावना की सराहना करते हुए आप सबके अच्छे स्वास्थ्य की कामना करता हूं।

आशा है कि 'रक्षा मानकी दर्पण-2021' में शामिल रचनाएं वर्तमान परिप्रेक्ष्य और नए दौर के अनुसार सभी पाठकों का मनोरंजन करने के साथ-साथ उनका ज्ञानवर्धन भी करेगी।

पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए मेरी ओर से शुभकामनाएं।

जय हिंद!

गो र वाणी

निदेशक
कमोडोर गोपाल आर वाणी

अनीता सिंह
सहायक निदेशक (रा.भा.)
दूरभाषः 011 23043262

भारत सरकार, रक्षा मंत्रालय
मानकीकरण निदेशालय
कमरा सं. 670, 'ए' ब्लॉक
छठी मंजिल, रक्षा कार्यालय परिसर
के. जी. मार्ग, नई दिल्ली-110001

संपादकीय

ई-गृह-पत्रिका 'रक्षा मानकी दर्पण-2021' के 25वे अंक का संपादकीय लेख प्रस्तुत करते हुए मुझे प्रसन्नता हो रही है। निदेशालय के राजभाषा अनुभाग, रचनाकारों एवं सम्पादन मण्डल के अधिकारियों व कर्मचारियों ने इस पत्रिका के प्रकाशन में जिस उत्साह के साथ सहयोग दिया है, इसके लिए सभी बधाई के पात्र है। प्रस्तुत अंक में आधुनिक समाज के विकास और विज्ञान से जुड़ी अद्यतन जानकारी से संबंधित रचनाओं को प्राथमिकता देने का प्रयास किया गया है। आज संपूर्ण विश्व तेजी से बदल रहा है। ऐसे में विचारों में भी क्रांति का दौर चलना स्वाभाविक होता है जिन्हें साहित्यिक प्रकृति के व्यक्ति समय-समय पर अपनी रचनाओं के माध्यम से मुखरता प्रदान करते हैं। तब वह रचना व्यक्ति की रचना के साथ समाज, देश और विश्व की रचना बन जाती है। 'रक्षा मानकी दर्पण' हिंदी भाषा के माध्यम से कार्मिकों की ऐसी वैचारिक क्रांतियों को दिशा प्रदान करती आ रही है।

आशा है हमारे प्रयास से पाठकगण लाभान्वित होंगे और यह पत्रिका हम सभी की हिंदी के प्रति पूर्ण निष्ठा व समर्पण भावना का परिचायक बनेगी।

'रक्षा मानकी दर्पण' के ई-प्रकाशन से जुड़े प्रकाशन मंडल को मेरी शुभकामनाएं।

(अनीता सिंह)
सहायक निदेशक (रा.भा.)

विषय सूची

क्रं.सं	रचना का नाम	रचनाकार का नाम	पृ.सं.
1.	समय का मूल्य	सीएचएम विवेक मोहन दुबे	1-4
2.	अक्षय ऊर्जा स्रोत एवं आवश्यकता	सार्जेन्ट निर्मल कुमार जोशी	5-10
3.	मेरी कहानी	मौहम्मद तकी जैदी	11
4.	सबसे बड़ा पुरस्कार-मेरा भारत महान	संदेश कुमार	12
5.	अन्नदाता हमारे विधाता	जयराम वर्मा	13
6.	कोरोना वायरस	सूबेदार वाई. चन्द्र राव	14
7.	मतवाले मदिरा के	प्रदीप कुमार	15
8.	आशीर्वाद लेने का वैज्ञानिक कारण?	रोहिदास दगडू डोळस	16
9.	भगवान की खोज	के. श्री निवासन	17
10.	जीवन जीना पुण्य का काम	के. श्री निवासन	18
11.	बेटियाँ	सोनाली माळी	19
12.	सत्य का महत्व	दिक्षा अक्षय साखरे	20
13.	जिंदगी	दिक्षा अक्षय साखरे	21
14.	बड़े घर की बेटी	प्रेमचंद	22-30
15.	भारतीय संगीत-एक परिचय	श्रीकुमार सी	31-33
16.	प्रकृति से छेड़छाड़ का परिणाम रहस्यमय रोग	हवलदार राम जी यादव	34-36
17.	संकल्प	नायक अभिषेक कुमार	37
18.	सब निःशुल्क है	सूबेदार प्रदीप कुमार	38
19.	माता-पिता की स्तुति	एल लॉग (एफ एवं ए) भूदेव बी. के प्रजापति	39
20.	हिंदी का गौरव	एल लॉग (एफ एवं ए) भूदेव बी. के प्रजापति	40-41
21.	कोराना तो है एक बहाना	जयराम वर्मा	42-43
22.	कोविड जमाना	हवलदार विनसेन्ट	44
23.	फिर कभी ना आये ऐसी महामारी	रश्मि शर्मा	45
24.	लहरे तिरंगा कहे, देश के जवानवा से	सूबेदार उमेश चन्द्र वर्मा	46
25.	बहना ओ बहना, मेरी प्यारी बहना	सूबेदार उमेश चन्द्र वर्मा	47
26.	हे भोला भण्डारी, सुन लो अरज हमारी	सूबेदार उमेश चन्द्र वर्मा	48
27.	विकास बन रहा है प्राकृतिक आपदाओं का कारण?	शीना ग्रोवर	49-51
28.	हिसाब	हवलदार सी कत्रन	52
29.	सुकून	कारपोरल दिलशाद	53
30.	अच्छाई	वारंट ऑफिसर उमाकान्त मोहंती	54
31.	हिंदी दिवस	नायक रूपेश कुमार	55
32.	मैं हिंदी हूँ	नायब सूबेदार सतीश चन्द	56
33.	हिंदी दिवस	नायब सूबेदार सतीश चन्द	57
34.	शब्दों का संसार	पराग ग्रोवर	58-60
35.	हिंदी	पराग ग्रोवर	61
36.	आजादी का अमृत महोत्सव	श्रीकृष्ण सिंह	62-63
37.	सपनों का भारत	रूचि देवी	64
38.	इतिहास में गुम एक संघर्ष की प्रासंगिकता	दलजीत कौर	65-69

समय का मूल्य

सीएचएम विवेक मोहन दुबे, रक्षा मानकीकरण सेल, देहरादून

समय का हमारे जीवन में अति महत्त्वपूर्ण स्थान है। यदि ये गुजर जाए तो फिर वापस लौटकर नहीं आता। यह सभी वस्तुओं से यहां तक कि धन से भी अधिक शक्तिशाली और अमूल्य है। खोया हुआ धन कठिन परिश्रम से पुनः प्राप्त किया जा सकता है लेकिन खोया हुआ समय कभी भी वापस नहीं आता। इसलिए प्रत्येक व्यक्ति को इसका मूल्य ज्ञात होना चाहिए। जिस किसी ने भी समय के महत्त्व और उसके मूल्य को पहचान कर उसका सदुपयोग किया है, वह निरंतर प्रगति पथ पर बढ़ता गया है। लेकिन जिसने भी इसे बर्बाद किया है उसे अंततः असफलता ही हाथ लगी है। समय का समुचित उपयोग ही विकास और सफलता की नींव है।

हम सभी के पास एक सीमित समय का ही जीवन है और प्रत्येक मनुष्य एक निश्चित समयावधि के साथ ही इस दुनिया में आया है। जब हम अपना बहुमूल्य समय अज्ञानतावश व्यर्थ के कार्यों में नष्ट कर देते हैं तो वस्तुतः अपने जीवन की सार्थकता का एक बड़ा भाग यूं ही गंवा देते हैं। समय के मूल्य को दर्शित करती एक कहावत भी कही गई है- "अब पछताए होत क्या, जब चिड़िया चुग गई खेत।"

समय निकल जाने पर व्यक्ति के पास सिवाय पछताने के कुछ नहीं बचता। इसी वज़ह से तत्पर और बुद्धिमान व्यक्ति उपयोगी समय को कभी भी नहीं गंवाते क्योंकि वे न केवल इसकी महत्ता को जानते हैं बल्कि इसके उपयोग से अपने जीवन को वांछित दिशा देते हैं। मनुष्य के जीवन का प्रत्येक क्षण एक दुर्लभ संपत्ति है जो सर्वोपरि धन है। सारी धन दौलत यदि नष्ट भी हो जाए तो भी कठिन परिश्रम से उसका अर्जन संभव है लेकिन नष्ट हुआ या व्यर्थ गया समय किसी भी तरह पुनः प्राप्त नहीं किया जा सकता। अंग्रेजी में कहावत हैः "**The Time is Gold**" अर्थात् समय ही सोना है अर्थात् मूल्यवान धन है। जिस किसी ने भी इस सच्चाई को समझ लिया, उसके लिए संसार में अन्य कुछ भी पाना कठिन नहीं रह जाता। किसी भी व्यक्ति की सफलता का रहस्य समय, गति और उसके महत्त्व को पहचानने में ही निहित है। कई अकर्मण्य मनुष्य

उपयुक्त समय की प्रतिक्षा में ही बैठे रहते हैं। इस भ्रम में कि उपयुक्त समय आएगा। वे अपना बहुमूल्य समय बिताते रहते हैं जिनके लिए कहावत भी हैः-

"काल करे सो आज कर आज करे सो अब
पल में प्रलय होएगी बहुरी करेगा कब।"

वास्तव में निरंतर बीतते वक्त को पहचान कर यदि हम अच्छे कर्म करके स्वयं अच्छे रहकर समय को अपने जीवन लक्ष्यों की पूर्ति हेतु समायोजित कर सकें तो इसे सदैव ही उपयुक्त और प्रगतिपरक बनाया जा सकता है। अन्य बातें तो सिर्फ समय को खोने वाली हैं। लोक जीवन में एक प्रचलित कहावत है- पलभर का चूका आदमी मीलों पीछे हो जाता है। हम सभी ने अपने जीवन में कभी न कभी समय गंवा देने का अनुभव किया होगा और यह भी देखा होगा कि अमुक व्यक्ति ने अपने समुचित प्रयत्न से उसी समय में उचित कार्य किया। निरंतर गतिशील संसार में समय के रुख और उसके अनुरूप उचित ढंग से लिए गए निर्णयों से काम करने वाला व्यक्ति ही सफलता का वरण कर पाता है। हम सभी के जीवन में एक न एक बार वह समय भी जरूर आता है, जब हम उसे पहचान कर उपयुक्त रूप से अपना कार्य करना शुरू कर दें तो कोई कारण नहीं कि हम असफल रह जाएं।

बहुत से महान पुरूषों की आत्मकथा, जीवनी दर्शाती है कि वे समय का मूल्य आत्मसात करके ही महान बन सके। महान वैज्ञानिक थामस एल्वा एडिसन हो या अब्राहम लिंकन, विवेकानंद हो या महात्मा गांधी सभी ने अपने जीवन में सीमित समय का समुचित प्रयोग उचित प्रयोजन हेतु किया, तभी वे इतिहास में महान व्यक्ति बन सके। जिस प्रकार विशाल समुद्र भी एक-एक बूंद से मिलकर बना है। रेगिस्तान एक-एक बालू के कण से बनता है। ठीक वैसे ही हमारा सम्पूर्ण जीवन एक-एक क्षणों के मिलने से बनता है जो निरंतर हाथ से फिसलती रेत की तरह ही बीतता जा रहा है। हम चाह कर भी न तो उन्हें रोक सकते हैं और न ही बीते हुए क्षण वापस ला सकते हैं। इन सूक्ष्म क्षणों को नगण्य जानकर जो इन्हें गंवाते रहते हैं, उन्हें अपनी घटती हुई समय राशि का अनुमान ही नहीं रहता। लेकिन इन क्षणों के ही रूप में उनके दिन, सप्ताह,

माह और वर्ष व्यतीत हो जाते हैं जिसके साथ ही उनका अमूल्य जीवन भी यूं ही बीत जाता है। इसकी गति को न पहचान कर जो कोई भी इसे नष्ट करता रहता है, समय भी अंततः ऐसे लोगों को नष्ट कर देता है। मानव जीवन में कार्य की सफलता कार्य की कुशलता से कहीं अधिक कार्य की तत्परता पर निर्भर करती है। समय का सबसे बड़ा शत्रु आलस्य या अकर्मण्यता होता है जिसके लिए कहा भी गया हैः "आलस्यं हि मनुष्याणां शरीस्थो महारियु।"

आलस्य वह दुर्गुण है जो यदि मनुष्य को लग जाए तो धनी व संपन्न व्यक्ति को भी निर्धन बनते देर नहीं लगती। अपने दैनिक जीवन में हम सभी ने समय की महत्ता दर्शित करने वाली घटनाओं को जरूर अनुभव किया होगा, जैसे कुछ ही मिनट की देरी से ट्रेन या बस का छूट जाना, अगर छात्र समय पर परीक्षा देने न पहुंच पाए तो उसका पूरा वर्ष व्यर्थ चला जाना, समय पर चिकित्सा न मिल पाने से मरीज का जीवन चला जाना इत्यादि। युद्ध काल में क्षणिक देरी सैकड़ों लोगों की मृत्यु का कारण भी बन सकती है। आज के समय में भी युवा वर्ग जिनके जीवन में अपरिमित संभावनाएं समाहित है, अवकाश के दिनों में व्यर्थ घर में बैठे रहते हैं या कहीं न कहीं बुरी संगति में अपने अमूल्य समय को बर्बाद करते रहते हैं जोकि अपने-आप में एक पाप के तुल्य है। जो भी समय के दुरूपयोग के इस प्रक्रम में लीन है उसका कभी भी उद्धार होना संभव नहीं।

सृष्टि के आरंभ से लेकर आज तक के मानव इतिहास में जो भी विकास और प्रगति रची गई है, वह समय के उचित प्रयोग से ही संभव हो सका है। यदि आविष्कारक और निर्माणकर्ता कल के भरोसे हाथ पर हाथ धरे अकर्मण्य बैठे रहते तो आज हमें सुख-सुविधाओं के ये तमाम साधन उपलब्ध न होते। कई अर्थों में समय की कीमत को पहचानने का मनुष्य का यह गुण उसे पशु-पक्षियों और जानवरों से पृथक करता है और श्रेष्ठ बनाता है और शायद इसीलिए पृथ्वी पर मनुष्य का एकछत्र आधिपत्य है। हम सभी के जीवन में अपने-अपने निर्धारित लक्ष्य होते हैं जिनकी पूर्ति के लिए विभिन्न कार्यों का निष्पादन आवश्यक है, जिन्हें करने का अलग-अलग समय

होता है। अव्यवस्थित कार्य हमारे जीवन में जहां उलझने और व्यर्थ की परेशानियों को लाता है, वहीं यदि हम अपने जीवन लक्ष्यों की पूर्ति के लिए सोच-विचार कर समग्र समय प्रबंधन कर सकें तो हमारे सभी कार्य अपनी निर्दिष्ट अवधि में अपेक्षित रूप से संपन्न होते नज़र आएंगें, जैसे यदि किसी दिन में समाप्त किए जाने वाले कार्यों को हम उनकी प्राथमिकताओं के अनुसार निर्धारित समय-अवधि में संपन्न करने के लिए डायरी में लिखें तो आसानी से पता कर सकते हैं कि हमारा रोज का समय कितना उपयोगी और कितना अनुपयोगी बातों में जाता है। इस प्रकार समय प्रबंधन द्वारा अपने प्रत्येक दिवस के समय का पूर्ण उपयोग निश्चित कर सकते हैं।

अंततः निष्कर्ष के रूप में हम यह कह सकते हैं कि समय का सदुपयोग हमारे जीवन में प्रगति की मूलभूत आवश्यकता है। बिना समय का मूल्य समझे हम इसका सदुपयोग नहीं कर सकते। जो लोग समय का सही उपयोग करते हैं, वे ही सफल बनते हैं और जीवन को सार्थक रूप से जीते हैं। हम सभी का कर्त्तव्य है कि अपने जीवन, समाज और देश की प्रगति के लिए अपने समय का सदुपयोग करते हुए राष्ट्र के भविष्य को उन्नति की ओर अग्रसर करें। अपने प्रत्येक कार्य और अपेक्षित कर्त्तव्य को निश्चित रूप से समय पर पूरा करें। हम सभी भारत देश के निर्माता हैं और हमें अपने देश की, समाज की और स्वयं की उन्नति के लिए अपने जीवन के प्रत्येक क्षण का सदुपयोग करना चाहिए।

अज्ञानी व्यक्ति को किसी-न-किसी विधि से सन्तुष्ट या प्रसन्न किया जा सकता है लेकिन अधूरे ज्ञानी को सन्तुष्ट या प्रसन्न करना कठिन है।

- राजा भर्तृहरि

अक्षय ऊर्जा स्रोत एवं आवश्यकता

सार्जेंट निर्मल कुमार जोशी, रक्षा मानकीकरण सेल, देहरादून

प्रस्तावनाः- दिन-प्रतिदिन टूटते ग्लेशियर, धरती का बढ़ता तापमान, कहीं भूकंप, कहीं बाढ़ इस बात का इशारा तो नहीं कर रहे कि हमारी धरती महाविनाश के मुहाने पर खड़ी है।

पट्रोल, डीजल, कोयला आदि भूमि में उपलब्ध ऊर्जा स्रोत सीमित मात्रा में है जबकि बढ़ती जनसंख्या और निरन्तर बढ़ती मानवीय आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए हमें इनका दोहन करना पड़ता है जिससे न केवल पर्यावरण पर बुरा प्रभाव पड़ रहा है बल्कि पूरा पर्यावरणीय संतुलन (इकोलोजिकल बैलेंस) बिगड़ रहा है।

अतः हमें ऐसे ऊर्जा स्रोतों की आवश्यकता है जो कभी नष्ट न हों और जिनका पर्यावरण पर भी बुरा प्रभाव न पड़े।

<u>अक्षय ऊर्जा के स्रोतः-</u>

(i) सौर-ऊर्जा

(ii) पवन-ऊर्जा

(iii) जल-ऊर्जा

(iv) भू-तापीय ऊर्जा

(v) बायोमास एवं जैव ईंधन

(vi) परमाणु ऊर्जा

(i) **<u>सौर-ऊर्जा</u>**ः- सौर-ऊर्जा की भारत में बेहतरीन संभावनाएं हैं क्योंकि देश के अधिकतर भागों में वर्ष में 250-300 दिन सूर्य अपनी किरणें बिखेरता है। सूर्य से ऊर्जा प्राप्त करने के लिए फोटोवोल्टेक सेल प्रणाली का प्रयोग किया जाता है। हमारे देश में प्रतिवर्ष 5 हजार अरब यूनिट बिजली सौर-ऊर्जा से प्राप्त की जा सकती है।

(ii) **<u>पवन-ऊर्जा</u>**ः- प्राचीन काल में पवन ऊर्जा का प्रयोग नाव चलाने में किया जाता था। लेकिन अभी इसका उपयोग विद्युत पैदा करने में किया जाता

है। पवन चक्कियों (Wind Mills) से जेनेरेटर के टरबाइन को घुमाया जाता है और बिजली पैदा की जाती है।

(iii) **जल-ऊर्जाः**- इसमें नदियों पर बांध बनाकर उनके जल से टरबाइनों द्वारा बिजली उत्पन्न की जाती है। इसके अलावा समुद्र में उत्पन्न होने वाले ज्वार-भाटा की लहरों से भी विद्युत उत्पादन किया जाता है।

(iv) **भू-तापीय ऊर्जाः**- भू-तापीय ऊर्जा का जन्म पृथ्वी की गहराई में गर्म, पिघली चट्टानों से होता है। इस स्रोत से ऐसे स्थानों पर ऊर्जा प्राप्त करने के लिए पृथ्वी के गर्म क्षेत्र तक एक सुरंग खोदी जाती है जिनके द्वारा पानी को वहां पहुंचा कर उसकी भाप बनाकर टरबाइन चलाकर बिजली बनाई जाती है।

(v) **बायोमास एवं जैव ईंधनः**- लकड़ी, गोबर और खरपतवार प्रमुख जैव-पदार्थ हैं जिनसे बायोगैस उत्पन्न की जाती है। भारत की लगभग 90% जनसंख्या जैव पदार्थों का प्रयोग खाना बनाने के लिए ईंधन के रूप में करती है।

(vi) **परमाणु ऊर्जाः**- डॉ. होमी जहांगीर भाभा को भारत में परमाणु विकास का जनक माना जाता है। हालांकि परमाणु-ऊर्जा पर्यावरण के लिए धातक नहीं है लेकिन इससे संबंधित कोई भी दुर्घटना अवश्य ही मानव-जीवन के लिए घातक सिद्ध होती है। इसका सबसे अधिक खतरा उत्पादन पश्चात रेडियोधर्मी अपशिष्ट है।

अक्षय-ऊर्जा की आवश्यकताः-

(i) **ऊर्जा संसाधनों की सीमितताः-** भूगर्भ में पेट्रोल, डीजल, कोयला आदि संसाधनों की सीमितता है और मानव अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए इनका निरंतर दोहन करता रहता है। इससे भूगर्भ धीरे-धीरे खोखला होता जा रहा है जिससे धरती का खिसकना, भूकंप आदि घटनाओं को बढ़ावा मिलता है। ऊर्जा के सीमित संसाधनों पर कुछ गिने-चुने देशों का कब्जा है और वो इन पर अपना एकाधिकार दिखाते हैं और मनमाने पैसे वसूलते हैं। जहां पर पेट्रोल एवं डीजल के कुएं होने की संभावनाएं होती हैं,

उस देश पर दूसरा शक्तिशाली देश कब्जा करना चाहता है। जैसे कुवैत पर ईराक ने हमला बोला तो अमरिका बीच में उतर आया है। इससे विभिन्न देशों में संघर्ष की संभावनाएं भी बढ़ती हैं जो महाविनाशकारी साबित हो सकती हैं। अगर हम अक्षय-ऊर्जा स्रोतों का उपयोग अपने राष्ट्र में करें तो हमारी दूसरे देशों पर निर्भरता खत्म हो जाएगी।

(ii) **<u>पर्यावरण पर कुप्रभावः</u>**- पेट्रोल, डीजल, कोयले जैसे फोसिल फ्यूल को जलाने से कार्बन-डाई-ऑक्साइड गैस निकलती है जिससे ग्रीन हाऊस इफेक्ट होता है और धरती का तापमान बढ़ता है जिसे ग्लोबल वार्मिंग कहते हैं। इससे ग्लेशियर का पिघलना, जोशी मठ, उत्तराखंड में ग्लेशियर का टूटना, अंटार्कटिका में गोवा राज्य से बड़े ग्लेशियर का घराशायी होना, समुद्र का स्तर बढ़ना, जलवायु परिवर्तन, ऋतुओं का समय-चक्र बदलना, बाढ़ का आना, आंधी, तूफान, चक्रवात आदि का आना जैसे घटनाएं होती हैं। अगर हम अक्षय-ऊर्जा के स्रोतों का इस्तेमाल करें तो धरती के बढ़ते तापपान को रोका जा सकता है।

(iii) **<u>देश की अर्थव्यवस्था पर प्रभावः</u>**- हमें अपने देश में ऊर्जा-खपत की आपूर्ति के लिए पेट्रोल, डीजल आदि ऊर्जा स्रोतों के लिए दूसरे देशों पर निर्भर रहना पड़ता है। इसके लिए हमें अपनी अर्थव्यवस्था का एक बहुत बड़ा हिस्सा दूसरे देशों को देना पड़ता है। इससे हमारी आर्थिक स्थिति कमजोर होती है तथा रूपये की कीमत में गिरावट आती है। अगर हम अक्षय-ऊर्जा स्रोतों का इस्तेमाल करें तो इस अतिरिक्त खर्चे गए धन की बचत की जा सकती है जिससे नए स्कूल, कॉलेज, विश्वविद्यालयों, अस्पताल, सड़कें, नहरें, रेलवे लाइनें, पर्यटक स्मारक बनाए जा सकते हैं।

(iv) **<u>देश की ऊर्जा की पूर्ति संभवः</u>**- अगर हम अक्षय-ऊर्जा को इस्तेमाल करें तो देश की ऊर्जा खपत की पूर्ति संभव हो सकती है जो निम्न आंकड़ों से स्पष्ट हैः

(क) पवन-ऊर्जाः- 38684 मेगावाट (41.8%)

(ख)	सौर-ऊर्जाः-	38794 मेगावाट (41.9%)
(ग)	बायोमास-ऊर्जाः-	10145.92 मेगावाट (11%)
(घ)	हाइड्रो पावरः-	4739.9 मेगावाट (5.1%)
(ड़)	वेस्ट टू पावरः-	168.64 मेगावाट (0.2%)

4. **विश्व, भारत और अक्षय-ऊर्जाः-** आज पूरा विश्व इस बात पर एकमत है कि प्राकृतिक महाविनाश से बचने के लिए हमें अक्षय-ऊर्जा स्रोतों को अपनाना ही होगा। पेरिस करार के तहत सभी देशों का लक्ष्य है कि ग्लोबल वार्मिंग को 2° सेल्सियस से नीचे रखा जाए और उसे 1.5° सेल्सियस तक लाया जाए। विश्व के सबसे अमीर शख्स में से एक एलन मस्क ने टेस्ला कम्पनी की एक नई विद्युत कार लांच की है जो एक बार बदलाव करने के बाद वह 500 किलोमीटर तक चल सकती है। स्विजरलैंड के इंजीनियर ने सौर-ऊर्जा से चलने वाले वायुयान आवेग को बनाया जिसने पूरे विश्व का एक चक्कर लगाया।

आगे आने वाला समय अक्षय-ऊर्जा स्रोतों या Clean Energy Resources को अपनाने वाले देशों का होने वाला है। भारत में 05 राज्यों- तमिलनाडु, गुजरात, राजस्थान, महाराष्ट्र और कर्नाटक में जहां सूर्य का प्रकाश प्रचुर मात्रा में मिलता है, सौलर ग्रिड्स लगाई गई हैं। कर्नाटक में लगभग 1000 गावों को सौर-ऊर्जा से बिजली मिलती है। भारत में पिछले दशकों में पवनचक्कियों की रूपरेखा, स्थल का चयन, स्थापना, कार्यकलाप और रख-रखाव में तकनीकी रूप से प्रगति हुई है। भारत में 48500 मेगावाट बिजली पवन-ऊर्जा से प्राप्त की जा सकती है। अभी बाजार में विद्युत-मोटरसाइकल, विद्युत-रिक्शा, विद्युत-बसें भी आ चुकी हैं। दिल्ली सरकार ने नई बसों के ऑर्डर विद्युत-बसों के दिए हैं। भारत सरकार पुनःप्राप्त ऊर्जा स्रोत पर काम करने वाली कम्पनियों एवं निर्माणी एजेंसियों को सब्सिडी एवं बढ़ावा भी देती है।

हमारे प्रधानमंत्री क्लीन एनर्जी के क्षेत्रों में पूरे विश्व की अगुवाई कर रहे हैं। अगर भारत आगे आने वाले समय में यदि पूरी तरह अक्षय-ऊर्जा को प्राप्त करने के साधन जुटा लेता है तो भारत विश्व के सबसे अमीर देशों की पंक्ति में खड़ा होगा और अरब

देशों एवं अमरिका जैसे तेल सम्पदा देशों का दबदबा खत्म हो जाएगा और फिर होगा पैराडाइम शिफ्ट, फिर भारत बनेगा एक उभरती हुई और चमकती हुई अर्थव्यवस्था।

5. **अक्षय-ऊर्जा के लिए हम क्या करें:-**

(1) हम एक-दूसरे को नवीकरणीय उर्जा-स्रोत (Renewal Energy Resource) उपयोग करने के लिए प्रेरित करें।

(2) अपने घर में बिजली अक्षय-ऊर्जा से प्राप्त करें।

(3) ऐसे बल्ब एवं ट्यूबलाइट का उपयोग करें जो कम बिजली की खपत करते हों।

(4) पानी की बर्बादी कम से कम करें।

(5) हम ज्यादा से ज्यादा पेड़ लगाएं।

(6) पानी को रिसाइकल करके इस्तेमाल करें।

(7) विद्यालय, कालेज एवं विश्वविद्यालय में अक्षय-ऊर्जा स्रोतों के पाठ्यक्रम को डालें।

(8) सोशल मिडिया, प्रिंट मिडिया या नए चैनल पर इसका प्रचार-प्रसार होना चाहिए।

(9) सरकारी कार्यालयों में अक्षय-ऊर्जा स्रोतों से प्राप्त ऊर्जा को उपयोग करना अनिवार्य कर देना चाहिए।

6. **उपसंहार:-** अक्षय-ऊर्जा के क्षेत्र में भारत सरकार द्वारा जो योजनाएं चलाई जा रही है उनसे यह आशा बंधती है कि हम निकट भविष्य में अपनी ऊर्जा-प्राप्ति और पर्यावरण-सुरक्षा की समस्या का समाधान खोजने में अवश्य सफल होंगे। भारत तेल और डीजल के निर्यात से निजात पाकर एक बहुत मजबूत अर्थव्यवस्था के रूप में उभरेगा। अभी भारत रूपान्तरण की स्थिति में खड़ा है। कुछ दिनों बाद भारत में अधिकतम वाहन विद्युत से चलने वाले विद्युत-उपकरण हो जाएंगे। बहुत से रेलवे स्टेशन, एयरपोर्ट और बस अड्डे सोलर उपकरण हो जाएंगे फिर एक नए भारत का उदय होगा। लेकिन इसको सच करने

के लिए सबका योगदान और नज़रिया बहुत महत्वपूर्ण है। हमें न केवल अक्षय-ऊर्जा या रिन्यूअल एनर्जी या क्लीन एनर्जी के महत्व को समझना होगा बल्कि अपने परिवार, समाज, सहकर्मियों एवं दोस्तों को भी इसके उपयोग की महत्ता बतानी होगी और उन्हें प्रेरित करना होगा क्योंकि आपका और हमारा एक छोटा सा सहयोग हमारे देश के स्वर्णिम भविष्य का निर्माण कर सकता है।

"युवक और युवतियां अंग्रेजी और दुनिया की दूसरी भाषाएं खूब पढ़े और जरूर पढ़े। लेकिन उनसे मैं आशा करूंगा कि वे अपने ज्ञान का प्रसाद भारत को और सारे संसार को उसी तरह प्रदान करेंगे, जैसे बोस, राज और स्वयं कवि रविन्द्रनाथ ने प्रदान किया है। मगर मैं हरगिज यह नहीं चाहूंगा कि कोई भी हिन्दुस्तानी अपनी मातृभाषा को भूल जाए या उसकी उपेक्षा करे या उसे देखकर शरमाए अथवा यह महसूस करे कि अपनी मातृभाषा के जरिए वह ऊंचा चिंतन नहीं कर सकता है।'

- महात्मा गांधी

मेरी कहानी

मौहम्मद तकी जैदी, रक्षा मानकीकरण सेल, देहरादून

वो बचपन के सपने, वो बचपन के अरमां
वो भारत पे मरना, वो दुश्मन से लड़ना

वो मोहब्बत-ए-वतन, वो कुछ करने का दम
वो इरादों का गढ़ना, वो आगे ही बढ़ना

वो सर्दी की रातें, वो हाथों में किताबें
वो सफलता की चाह, वो मुश्किल भरी राह

वो बचपन का दौर, फिर वो जवानी का मोड़
वो हसरतों का मचलना, वो गिरते-गिरते संभलना

वो सही रास्तों पे चलना, वो कभी ना भटकना
वो मंजिल की ओर बढ़ना, वो थककर ना थकना

वो हिम्मतों की बयानी, वो दादी की जबानी
वो आंखों में पानी, वो मेरी कहानी......
वो मेरी कहानी....... वो मेरी कहानी.......

सबसे बड़ा पुरस्कार

संदेश कुमार, रक्षा मानकीकरण सेल, देहरादून

देश सेवा जन सेवा है, सबसे बड़ा पुरस्कार,
सभी इसमें हाथ बंटाओं, न करो तिरस्कार,
अच्छे-अच्छे कार्य करके, देश का बढ़ाओ मान,
धर्म-कर्म के कार्य करोगे, तो पाओगे सम्मान,

वेद पुराण भागवत गीता, देते अच्छा ज्ञान,
अच्छे ज्ञान का अर्जन करके, बन जाओ महान,
अच्छी पढ़ाई देता सद्बुद्धि, इससे होती कार्य में वृद्धि,

रिद्धि-सिद्धि पाने से ही, होती है धन में वृद्धि,
डॉक्टर, इंजीनियर बनकर देश को आगे बढ़ाओ,
नई राह नई चाह के साथ देश को उन्नत बनाओ
पूरे विश्व में शांति संदेश देकर नए सम्पर्क बनाओ,
नई ऊंचाइयों को छूकर ही, देश का नाम कमाओ,

स्वच्छ पर्यावरण बना रहे, बहे सुगंधित धारा,
सब मिलकर कार्य करें, दे स्वच्छता का नारा,
स्वच्छ देश स्वच्छ वातावरण, हमारी धरोहर,
इसको संजोकर रखें हम, सभी स्वच्छ रहे ताल सरोवर,

छोटा मिले या बड़ा कार्य मिले, उसे करो स्वीकार,
धरती पर गंदगी बंद करो, न करो मां का तिरस्कार
अच्छे कर्म अच्छे धर्म द्वारा, करते रहो उपकार,
हमारे अच्छे कर्म द्वारा ही, मिलता है पुरस्कार।

अन्नदाता हमारे विधाता

जयराम वर्मा, रक्षा मानकीकरण सेल, बदरपुर

हाय रे हमारे विधाता
देश मे दुखी क्यों है अन्नदाता
सत्तर फीसदी है जिसकी आबादी
फिर भी उसको नहीं है आजादी
सुख सपना हुआ किसानों में
जीवन बीता संघर्ष और परेशानी में
अपना दर्द किससे कहें, कुछ समझ नहीं पाता
देश में दुखी क्यों है अन्नदाता।

उत्तम खेती का नारा धराशायी हुआ
जो करता खेती उसका जीवन दुखदायी हुआ
नौकरी-चाकरी वाले के सिर पर ताज हुआ
व्यापारी वर्ग के हाथों में अब राज हुआ
मुनाफे की बात कहां, लागत भी नहीं निकाल पाता
देश में दुःखी क्यों है अन्नदाता

नाम है जगपालक, पर सबके आगे हाथ जोड़ रहा
अपना मेहनताना पाने को सड़कों पर वह दौड़ रहा
सबका पेट भरने वाला, खुद भूखे पेट सो रहा
बोझ के नीचे दबा है फिर भी बोझ ढो रहा
ऐसा निरीह प्राणी, सदैव शीश झुकाता
देश में दुःखी क्यों है अन्नदाता।

कोराना वायरस पर कविता

सूबेदार वाई चन्द्र राव, तकनीकी समन्वय समूह

सोचा नहीं था, ऐसा भी वक्त आएगा.....
फुरसत होगी लोगों के पास लेकिन,
मिल कोई नही पाएगा.....
दुनिया में आई इस विचित्र विपदा.....
ने बताया है कि मनुष्य को हराने वाली,
कोई अदृश्य शक्ति नहीं बल्कि मात्र एक पंक्ति है.....

जो वो हमेशा से कहता रहा कि
सुरक्षा जीवन का अर्थ है, सुरक्षा के बिना सब व्यर्थ है।
अंधेरा चाहे जितना भी हो, उजाला आकर रहेगा,
विश्वास रखो देशवालो, कोरोना जाकर रहेगा,
सावधानी को बनाओं हथियार, मास्क और दूरी को औजार
कोरोना को हराना है, हम लोगों को घर पर ही रहना है,
अच्छे से हाथों को धोना है, सामान्य भोजन करना है,
कोई घर पर आए तो, नमस्ते हम लोगों को बोलना है,
कोरोना ने कैसा चक्कर चलाया, बड़े-बड़ों को घर में बैठाया

अब इसको भी भागना है, फिर से घूमने जाना है,
थाली से सब्जी गायब, मुंह से मावा गायब, मंहगा दौर जमाना है
सब घर पर रहें, सुरक्षित रहें, कोरोना से बिना डरे लड़ते रहें
यही सबको समझना है, कोरोना को डराना है.....।
दो गज की दूरी और मास्क लगाना है जरूरी
ऐसे ही कोरोना को हराना है.....।

मतवाले मदिरा के

प्रदीप कुमार, तकनीकी समन्वय समूह

देश में तालाबंदी का
चालीसा पूरा हुआ
मदिरा की दुकान का
ताला भी फिर खुल गया

ब्रहममुहुर्त में शुरू हुई
मीलों लंबी कतार लगी
जिहवा भी अत्यंत व्याकुल हो
मदिरा पीने को तरस रही

वर्षा, धूप की परवाह नहीं
दिन रात की कोई फिक्र नहीं
पकड़ा है जो रास्ता
मदिरा से ही वास्ता

राजस्व देश का बढ़ाएंगे
डूबती अर्थव्यवस्था को
मदिरा से ये उबारेंगे
कह-कह कर पीठ थपथपा रहे
गुणगान अपना है कर रहे

साथी मदिरा प्रेमी पर
पुष्पों की बरसात से
मदिरापान के कृत्य को
महिमामंडित भी कर रहे
मदिरा जिनके सिर चढ़ी
नशे के वे हुए शिकार
नशामुक्त सन्मार्ग पर ही
होगा हर जन का उद्धार।

आशीर्वाद लेने का वैज्ञानिक कारण?

रोहिदास दगडू डोकस, रक्षा मानकीकरण सेल, पुणे

आशीर्वाद लेने का आध्यात्मिक ही नहीं बल्कि वैज्ञानिक कारण भी है। यह एक योगासन की तरह है। जब भी हम योगासन करते हैं तो हमारे शरीर में विद्युत चुम्बकीय ऊर्जा का प्रवाह होता है और ये ऊर्जा हमारे शरीर में एक चक्र का निर्माण करती है। आप किसी भी आसन को कीजिये सभी में विद्युत चुम्बकीय ऊर्जा के चक्र का प्रवाह होता है। इसलिए हमें योगासन करते वक्त कुचालक वस्त्र का उपयोग करना चाहिए ताकि ये अर्थ के संपर्क में न आने पाए। हम जानते है कि उम्र के साथ-साथ शरीर की ऊर्जा का भी विकास होता है और यही ऊर्जा हमारे शरीर और मस्तिष्क का संचालन करती है।

जब हम किसी अपने से बड़े के पैर छूते हैं तो हम अपने हाथ उसके पैरों पर रखते हैं और वो अपना हाथ हमारे सिर पर रखते हैं। इस तरह विद्युत चुम्बकीय ऊर्जा का चक्र बन जाता है और उनकी ऊर्जा हमारे अन्दर प्रवाहित होने लगती है। इस तरह आशीर्वाद लेने से आपके शरीर में एक घनात्मक ऊर्जा का प्रवाह होने लगता है। इसलिए हमें बड़ों के पैरों को छूना चाहिए।

चूंकि भारतीय एक होकर एक समन्वित संस्कृति का विकास करना चाहते हैं, इसलिए सभी भारतीयों का यह परम् कर्तव्य हो जाता है कि वे हिंदी को अपनी भाषा समझ कर अपनाएं।

- डॉ. भीमराव अम्बेडकर

भगवान की खोज

के. श्री निवासन, रक्षा मानकीकरण सेल, पुणे

एक बार संत नामदेव अपने शिष्यों को ज्ञान-भक्ति का प्रवचन दे रहे थे। तभी श्रोताओं में बैठे किसी शिष्य ने एक प्रश्न किया, 'गुरूवर! हमें बताया जाता है कि ईश्वर हर जगह मौजूद है। यदि ऐसा है तो वो हमें कभी दिखाई क्यों नहीं देते? हम कैसे मान ले कि वो सचमुच हैं?' नामदेव मुस्कुराए और एक शिष्य को एक लोटा पानी और थोड़ा सा नमक लाने का आदेश दिया। शिष्य तुरंत दोनों चीजें लेकर आ गया। वहां बैठे शिष्य सोच रहे थे कि भला इन चीजों का प्रश्न से क्या संबंध? तभी संत नामदेव ने पुनः उस शिष्य से कहा, 'पुत्र! तुम नमक को लोटे में डाल कर मिला दो।' शिष्य ने ठीक वैसा ही किया। संत बोले, 'बताइए! क्या इस पानी में किसी को नमक दिखाई दे रहा है?' सभी ने नहीं में सिर हिला दिया। 'ठीक है!, अब कोई जरा इसे चख कर देखे क्या चखने पर नमक का स्वाद आ रहा है?' संत ने पूछा। 'जी', एक शिष्य पानी चखते हुए बोला। 'अच्छा! अब जरा इस पानी को कुछ देर उबालों', संत ने निर्देश दिया। कुछ देर तक पानी उबलता रहा और जब सारा पानी भाप बनकर उड़ गया तो संत ने पुनः शिष्यों को लोटे में देखने को कहा और पूछा, 'क्या अब आपको इसमें कुछ दिखाई दे रहा है, 'जी, हमें नमक के कण दिख रहे हैं।', एक शिष्य बोला। संत मुस्कुराए और समझाते हुए बोले, 'जिस प्रकार तुम पानी में नमक का स्वाद अनुभव कर पाए, पर उसे देख नहीं पाए। उसी प्रकार इस जग में तुम्हें ईश्वर हर जगह दिखाई नहीं देता, पर तुम उसे अनुभव कर सकते हो और जिस तरह अग्नि के ताप से पानी भाप बन कर उड़ गया और नमक दिखाई देने लगा, उसी प्रकार तुम भक्ति, ध्यान और सत्कर्म द्वारा अपने विकारों का अंत कर भगवान को प्राप्त कर सकते हो।'

जीवन जीना पुण्य का काम

के. श्री निवासन, रक्षा मानकीकरण सेल, पुणे

महर्षि रमण अपने आश्रम में अधिकतर काम खुद ही करते थे। वे काम करते-करते शिष्यों को गहरे संदेश भी दे देते थे। उनके आश्रम के पास ही एक अध्यापक रहता था। पढ़ने-पढ़ाने वाले उस अध्यापक के घर में हमेशा कलह होता था। पति-पत्नी के झगड़े इतने बढ़ गए कि उस शिक्षक ने आत्महत्या करने का विचार किया और घर से निकल पड़ा। उसके मन में कई विचार चल रहे थे। उनमें से एक विचार ये था कि क्यों न मरने से पहले एक बार महर्षि रमण से मिल लिया जाए। इसके बाद तो मरना ही है।

शिक्षक महर्षि रमन के पास पहुंच गया। महर्षि उस समय दोने-पत्तल बना रहे थे। आश्रम में भोजन के लिए दोने-पत्तल का ही उपयोग किया जाता था। चूंकि वह व्यक्ति शिक्षक था तो उसे जिज्ञासा हुई और उसने महर्षि जी से प्रश्न पूछा कि आप ये दोने-पत्तल इतनी मेहनत और एकाग्रता के साथ बना रहे हैं और लोग इसमें भोजन करेंगे फिर इन्हें फेंक देंगे। क्या फायदा ऐसी मेहनत से? महर्षि बोले, 'ये बिल्कुल सही है कि मैं इन्हें मेहनत से बना रहा हूं। ये भी सही है कि इनका उपयोग करने के बाद लोग इसे फेंक देंगे। लेकिन कम से कम इनका उपयोग करने के बाद फेकेंगे। कुछ लोग तो बिना उपयोग किए या चीजों का दुरूपयोग करके वस्तु फेंक देते हैं। ये तो और भी गलत है।' रमण जानते थे कि यह व्यक्ति तनाव में है। दुःखी शिक्षक ने रमण के उत्तर से तुरंत संदेश समझ लिया कि आत्महत्या करना जीवन का दुरूपयोग करने जैसा है।

सीखः- हमें मनुष्य का जीवन मिला है तो इसका सही उपयोग करें। इसे ऐसे ही समाप्त नहीं करना चाहिए। आत्महत्या करना पाप है और जीवन जीना पुण्य का काम है।

बेटियां

सोनाली माळी, रक्षा मानकीकरण सेल, पुणे

घर की जान होती हैं बेटियां
पिता का गुमान होती हैं बेटियां
ईश्वर का आशीर्वाद हैं बेटियां
यूं समझ लो कि बेमिसाल होती हैं बेटियां।

बेटों से ज्यादा वफादार होती हैं बेटियां
मां के कामों में मददगार होती हैं बेटियां
मां-बाप के दुःख को समझे, इनती समझदार होती हैं बेटियां
असीम प्यार पाने की हकदार होती हैं बेटियां।

बेटियों की आंखे कभी नम न होने देना
जिंदगी में उनकी खुशियां कम न होने देना
बेटियों को हमेशा हौंसला देना, गम कभी भी न होने देना
बेटा-बेटी में फर्क होता है, खुद को ये भ्रम न होने देना।

सत्य का महत्व

दिक्षा अक्षय साखरे, रक्षा मानकीकरण सेल, पुणे

‘सत्य’ एक ऐसी बोली है, जब हम किसी से सच बोलते हैं तो हमारी जिंदगी में हमें बहुत कुछ परिवर्तन देखने को मिलता है। आज के युग में सत्य का बड़ा ही महत्व है। सत्य हमारे जीवन का एक हिस्सा है। अगर दुनिया में हर एक इंसान सत्य बोले तो हमारा पूरा देश बहुत आगे बढ़ सकता है। सत्य एक ऐसी बोली है जो भले ही दिखता नहीं लेकिन, करता सबकुछ है। जब भी हम किसी से सत्य बोलते हैं तो सामने वाला हमारे हाव-भाव से समझ जाता है कि हम सत्य बोल रहे हैं और जब भी हम झूठ बोलते हैं तो सामने वाला समझ जाता है कि हम झूठ बोलते हैं क्योंकि सत्य या झूठ बोलने में हमारे शरीर के हिस्से अलग-अलग तरह से प्रतिक्रिया करते हैं जिससे सामने वाले को एहसास हो जाता है कि ये सत्य कह रहा है या झूठ।

हम दुनिया में कोई सा भी काम कर रहे हों, अगर वह काम हम सत्य के साथ करेंगे तो वाकई में हम उस काम में बहुत ज्यादा विकास कर सकते हैं और अगर झूठ के साथ उस काम की शुरूआत करेंगे तो पक्का है कि आप उस काम में कोई ज्यादा सफलता अर्जित नहीं कर पाएंगे क्योंकि लोग आप पर विश्वास नहीं करेंगे और आप उस काम को छोड़ कर घर पर बैठ जाओगे। इसलिए सत्य के महत्व को समझिए। सत्य दुनिया की ऐसी चीज है जो भले ही दिखती नहीं लेकिन करती सब कुछ है। इसलिए हमेशा सत्य की ही जीत होती है।

सत्यमेव जयते

जिंदगी

दिक्षा अक्षय साखरे, रक्षा मानकीकरण सेल, पुणे

दो पल की जिंदगी है, आज बचपन, कल जवानी,
परसों बुढ़ापा, फिर खत्म कहानी है।
चलो हंस कर जीएं, चलो खुलकर जीएं,
फिर ना आने वाली यह रात सुहानी,
फिर ना आने वाला यह दिन सुहाना।

कल जो बीत गया, सो बीत गया,
क्यों करते हो आने वाले कल की चिंता
आज और अभी जीयो, दूसरा पल हो ना हो।

आओ जिंदगी को गाते चलें,
कुछ बातें मन की करते चलें,
रूठों को मनाने चलें।

आओ जीवन की कहानी प्यार से लिखने चलें,
कुछ बोल मीठे बोलने चलें,
कुछ रिश्ते नए बनाने चलें।
क्या लाए थे, क्या ले जाएंगे,
आओ कुछ लुटाने चलें,
आओ सब के साथ चलते चलें,
जिंदगी का सफर यूं ही काटते चलें।

बड़े घर की बेटी

प्रेमचंद

बेनीमाधव सिंह गौरीपुर गांव के जमींदार और नम्बरदार थे। उनके पितामह किसी समय बड़े धन-धान्य संपन्न थे। गांव का पक्का तालाब और मंदिर जिनकी अब मरम्मत भी मुश्किल थी, उन्हीं के कीर्ति-स्तंभ थे। कहते हैं, जिस दरवाजे पर हाथी झूमता था, अब उसकी जगह एक बूढ़ी भैंस थी, जिनके शरीर में अस्थि-पंजर के सिवा और कुछ न रहा था, पर दूध शायद बहुत देती थी; क्योंकि एक न एक आदमी हाँड़ी लिए उसके सिर पर सवार ही रहता था। बेनामाधव सिंह अपनी आधी से अधिक संपत्ति वकीलों को भेंट कर चुके थे। उनकी वर्तमान आय एक हजार रूपये वार्षिक से अधिक न थी। ठाकुर साहब के दो बेटे थे। बड़े का नाम श्रीकंठ सिंह था। उसने बहुत दिनों के परिश्रम और उद्योग के बाद बी.ए. की डिग्री प्राप्त की थी। अब एक दफ्तर में नौकर था। छोटा लड़का लालबिहारी सिंह दोहरे बदन का, सजीला जवान था। भरा हुआ मुखड़ा, चौड़ी छाती। भैंस का दो सेर ताजा दूध वह उठ कर सबेरे पीता था। श्रीकंठ सिंह की दशा बिलकुल विपरीत थी। इन नेत्रप्रिय गुणों को उन्होंने बी.ए.- इन्हीं दो अक्षरों पर न्योछावर कर दिया था। इन दो अक्षरों ने उनके शरीर को निर्बल और चेहरे को कांतिहीन बना दिया था। इसी से वैद्यक ग्रंथों पर उनका विशेष प्रेम था। आयुर्वेदिक औषधियों पर उनका अधिक विश्वास था। शाम-सवेरे से उनके कमरे से प्रायः खरल की सुरीली कर्णमधुर ध्वनि सुनायी दिया करती थी। लाहौर और कलकत्ते के वैद्यों से बड़ी लिखा-पढ़ी रहती थी।

श्रीकंठ इस अँगरेजी डिग्री के अधिपति होने पर भी अँग्रेजी सामाजिक प्रथाओं के विशेष प्रेमी न थे; बल्कि वह बहुधा बड़े जोर से उनकी निंदा और तिरस्कार किया करते थे। इससे गाँव में उनका बड़ा सम्मान था। दशहरे के दिनों में वह बड़े उत्साह से रामलीला में सम्मिलित होते और स्वंय किसी न किसी पात्र का पार्ट लेते थे। गौरीपुर में रामलीला के वही जन्मदाता थे। प्राचीन हिंदु सभ्यता का गुणगान उनकी धार्मिकता का प्रधान अंग था। सम्मिलित कुटुम्ब के तो वह एकमात्र उपासक थे। आजकल स्त्रियों को

कुटुम्ब में मिल-जुल कर रहने की जो अरूचि होती है, उसे वह जाति और देश दोनों के लिए हानिकारक समझते थे। यही कारण था कि गाँव की ललनाएं उनकी निंदक थीं! कोई-कोई तो उन्हें अपना शत्रु समझने में भी संकोच न करती थीं! स्वंय उनकी पत्नी को ही इस विषय में उनसे विरोध था। यह इसलिए नहीं कि उसे अपने सास-ससुर, देवर या जेठ आदि से घृणा थी, बल्कि उसका विचार था कि यदि बहुत कुछ सहने और तरह देने पर भी परिवार के साथ निर्वाह न हो सके, तो आये-दिन की कलह से जीवन को नष्ट करने की अपेक्षा यही उत्तम है कि अपनी खिचड़ी अलग पकायी जाए।

आनंदी एक बड़े उच्च कुल की लड़की थी। उसके बाप एक छोटी-सी रियासत के ताल्लुकेदार थे। विशाल भवन, एक हाथी, तीन कुत्ते, बाज, बहरी-शिकरे, झाड़-फानुस, आनरेरी मजिस्ट्रटी और ऋण, जो एक प्रतिष्ठित ताल्कुकेदार के भोग्य पदार्थ हैं, यहाँ सभी विद्यमान थे। नाम था भूपसिंह। बड़े उदार-चित्त और प्रतिभाशाली पुरुष थे; पर दुर्भाग्य से लड़का एक भी न था। सात लड़कियां हुई और दैवयोग से सब की सब जीवित रहीं। पहली उमंग में तो उन्होंने तीन ब्याह दिल खोल कर किये; पर पद्रंह-बीस हजार रूपयों का कर्ज सिर पर हो गया, तो आँखें खुली, हाथ समट लिया; आनंदी चौथी लड़की थी। वह अपनी सब बहनों से अधिक रूपवती और गुणवती थी। इससे ठाकुर भूपसिंह उसे बहुत प्यार करते थे। सुन्दर संतान को कदाचित् उसके माता-पिता भी अधिक चाहते हैं। ठाकुर साहब बड़े धर्म-संकट में थे कि इसका विवाह कहाँ करें? न तो यही चाहते थे कि ऋण का बोझ बढ़े और न यही स्वीकार था कि उसे अपने को भाग्यहीन समझना पड़े। एक दिन श्रीकंठ उनके पास किसी चंदे का रूपया माँगने आये। शायद नागरी-प्रचार का चंदा था। भूपसिंह उनके स्वभाव पर रीझ गये और धूमधाम से श्रीकंठ सिंह का आनंदी के साथ ब्याह हो गया।

आनंदी अपने नये घर में आयी, तो यहाँ पर रंग-ढंग और ही देखा। जिस टीम-टाम की उसे बचपन से ही आदत पड़ी हुई थी, वह यहां नाम-मात्र को भी न थी। हाथी-घोड़ों का तो करना ही क्या, कोई सजी हुई सुंदर बहली तक न थी। रेशमी स्लीपर साथ लायी थी; पर यहाँ बाग कहाँ। मकान में खिड़कियाँ तक न थीं, न जमीन पर फर्श, न दीवार पर तस्वीरें। यह सीधा-सादा देहाती गृहस्थ का मकान था; किन्तु आनंदी ने थोड़े ही

दिनों में अपने को इस नयी अवस्था के ऐसा अनुकूल बना लिया, मानो उसने विलास के सामान कभी देखे ही न थे।

एक दिन दोपहर के समय लालबिहारी सिंह दो चिड़िया लिये हुए आया और भावज से बोला-जल्दी से पका दो, मुझे भूख लगी है। आनंदी भोजन बनाकर उसकी राह देख रही थी। अब वह नया व्यंजन बनाने बैठी। हाँड़ी में देखा, तो घी पाव-भर से अधिक न था। बड़े घर की बेटी, किफायत क्या जाने। उसने सब घी माँस में डाल दिया। लालबिहारी खाने बैठा, तो दाल में घी न था, बोला-दाल में घी क्यों नहीं छोड़ा?

आनंदी ने कहा- घी सब माँस में पड़ गया। लालबिहारी जोर से बोला- अभी परसों घी आया है। इतना जल्दी उठ गया?

आनंदी ने उत्तर दिया- आज तो कुल पाव-भर रहा होगा। वह सब मैंने माँस में डाल दिया।

जिस तरह सूखी लकड़ी जल्दी से जल उठती है उसी तरह क्षुधा से बावला मनुष्य जरा-जरा सी बात पर तिनक जाता है। लालबिहारी को भावज की यह ढिठाई बहुत बुरी मालूम हुई, तिनक कर बोला-मैके में तो चाहे घी की नदी बहती हो!

स्त्री गालियाँ सह लेती हैं, मार भी सह लेती हैं, पर मैके की निंदा उनसे नहीं सही जाती। आनंदी मुँह फेर कर बोली- हाथी मरा भी, तो नौ लाख का। वहाँ इतना घी नित्य नाई-कहार खा जाते हैं।

लालबिहारी जल गया, थाली उठाकर पलट दी और बोला- जी चाहता है, जीभ पकड़ कर खींच लूँ।

आनंदी को भी क्रोध आ गया। मुँह लाल हो गया, बोली- वह होते तो आज इसका मजा चखाते।

अब अपढ़, उजड्ड ठाकुर से न रहा गया। उसकी स्त्री एक साधारण जमींदार की बेटी थी। जब जी चाहता, उस पर हाथ साफ कर लिया करता था। खड़ाऊँ उठाकर आनंदी की ओर जोर से फेंकी और बोला- जिसके गुमान पर भूली हुई हो, उसे भी देखूंगा और तुम्हें भी।

आनंदी ने हाथ से खड़ाऊँ रोकी, सिर बच गया; पर ऊँगली में बड़ी चोट आयी। क्रोध के मारे हवा से हिलते पत्ते की भाँति काँपती हुई अपने कमरे में आकर खड़ी हो गयी। स्त्री का बल और साहस, मान और मर्यादा पति तक है। उसे अपने पति के ही बल और पुरूषत्व का घमंड होता है। आनंदी खून घूँट पीकर रह गयी।

श्रीकंठ सिंह शनिवार को घर आया करते थे। बृहस्पति को यह घटना हुई थी। दो दिन तक आनंदी कोप-भवन में रही। न कुछ खाया न पिया, उनकी बाट देखती रही। अंत में शनिवार को वह नियमानुकूल संध्या समय घर आये और बाहर बैठ कर कुछ इधर-उधर की बातें, कुछ देश-काल संबंधी समाचार तथा कुछ नये मुकदमों आदि की चर्चा करने लगे। यह वार्तालाप दस बजे रात तक होता रहा। गाँव के भद्र पुरूषों को इन बातों में ऐसा आनंद मिलता था कि खाने-पीने की भी सुधि न रहती थी। श्रीकंठ को पिंड छुड़ाना मुश्किल हो जाता था। ये दो-तीन घंटे आनंदी ने बड़े कष्ट से काटे! किसी तरह भोजन का समय आया। पंचायत उठी। एकांत हुआ, तो लालबिहारी ने कहा- भैया, आप जरा भाभी को समझा दीजिएगा कि मुँह सँभाल कर बातचीत किया करें, नहीं तो एक दिन अनर्थ हो जायेगा।

बेनीमाधव सिंह ने बेटे की ओर साक्षी दी- हाँ, बहू-बेटियां का यह स्वभाव अच्छा नहीं कि मर्दों के मुँह लगें।

लालबिहारी- वह बड़े घर की बेटी हैं, तो हम भी कुर्मी-कहार नहीं हैं। श्रीकंठ ने चिंतित स्वर में पूछा- आखिर बात क्या हुई?

लालबिहारी ने कहा- कुछ भी नहीं; यों ही आप उलझ पड़ी। मैके के सामने हम लोगों को कुछ समझती ही नहीं।

श्रीकंठ खा-पीकर आनंदी के पास गये। वह भरी बैठी थी। यह हजरत भी कुछ तीखें थे। आनंदी ने पूछा- चित्त तो प्रसन्न है।

श्रीकंठ बोले- बहुत प्रसन्न है; पर तुमने आजकल घर में यह क्या उपद्रव मचा रखा है?

आनंदी की त्योरियों पर बल पड़ गये, झुँझलाहट के मारे बदन में ज्वाला-सी दहक उठी। बोली- जिसने तुमसे यह आग लगायी है, उसे पाऊँ, मुँह झुलस दूँ।

श्रीकंठ- इतनी गरम क्यों होती हो, बात तो कहो।

आनंदी- क्या कहूँ, यह मेरे भाग्य का फेर है! नहीं तो गँवार छोकरा, जिसको चपरासगिरी करने का भी शऊर नहीं, मुझे खड़ाऊँ से मार कर यो न अकड़ता।

श्रीकंठ- सब हाल साफ-साफ कहो, तो मालूम हो। मुझे तो कुछ पता नहीं।

आनंदी- परसों तुम्हारे भाई ने मुझसे माँस पकाने को कहा। घी हाँडी में पाव-भर से अधिक न था। वह सब मैंने माँस में डाल दिया। जब खाने बैठा तो कहने लगा- दाल में घी क्यों नहीं है। बस, इसी पर मेरे मैके को बुरा-भला कहने लगा। मुझसे न रहा गया। मैंने कहा कि वहाँ इतना घी तो नाई-कहार खा जाते हैं और किसी को जान भी नहीं पड़ता। बस इतनी सी बात पर अन्यायी ने मुझ पर खड़ाऊँ फेंक मारी। यदि हाथ से न रोक लूँ, तो सिर फट जाता। उसी से पूछो, मैंने जो कुछ कहा है, वह सच है या झूठ।

श्रीकंठ की आँखें लाल हो गयीं। बोले- यहाँ तक हो गया, इस छोकरे का यह साहस!

आनंदी स्त्रियों के स्वभावानुसार रोने लगी; क्योंकि आँसू उनकी पलकों पर रहते हैं। श्रीकंठ बड़े धैर्यवान और शांत पुरूष थे। उन्हें कदाचित् ही कभी क्रोध आता था; स्त्रियों के आँसू पुरूष की क्रोधाग्नि भड़काने में तेल का काम देते हैं। रातभर करवटें बदलते रहे। उद्विग्नता के कारण पलक तक नहीं झपकी। प्रातःकाल अपने बाप के पास जाकर बोले- दादा, अब इस घर में मेरा निबाह न होगा।

इस तरह की विद्रोह-पूर्ण बातें कहने पर श्रीकंठ ने कितनी ही बार अपने कई मित्रों को आड़े हाथों लिया था, परन्तु दुर्भाग्य, आज उन्हें स्वयं वे ही बातें अपने मुँह से कहनी पड़ी! दूसरों को उपदेश देना भी कितना सहज है!

बेनीमाधव सिंह घबरा उठे और बोले- क्यों?

श्रीकंठ- इसलिए कि मुझे भी अपनी मान-प्रतिष्ठा का कुछ विचार है। आपके घर में अब अन्याय और हठ का प्रकोप हो रहा है। जिनको बड़ों का आदर-सम्मान करना चाहिए, वे उनके सिर चढ़ते हैं। मैं दूसरे का नौकर ठहरा। घर पर रहता नहीं। यहाँ मेरे पीछे स्त्रियों पर खड़ाऊँ और जूतों की बौछारें होती हैं। कड़ी बात तक चिंता नहीं। कोई एक की दो कह ले, वहाँ तक मैं सह सकता हूँ किन्तु यह कदापि नहीं हो सकता कि मेरे ऊपर लात-घूँसे पड़े और मैं दम न मारूँ।

बेनीमाधव सिंह कुछ जवाब न दे सके। श्रीकंठ सदैव उनका आदर करते थे। उनके ऐसे तेवर देख कर बूढ़ा ठाकुर अवाक् रह गया। केवल इतना ही बोला- बेटा, तुम बुद्धिमान होकर ऐसी बातें करते हो? स्त्रियाँ इस तरह घर का नाश कर देती हैं। उनको बहुत सिर चढ़ाना अच्छा नहीं।

श्रीकंठ- इतना मैं जानता हूँ, आपके आशार्वाद से ऐसा मूर्ख नहीं हूँ। आप स्वयं जानते हैं कि मेरे ही समझाने-बुझाने से इस गाँव में कई घर संभल गये, पर जिस स्त्री की मान-प्रतिष्ठा का ईश्वर के दरबार में उत्तरदाता हूं, उसके प्रति ऐसा घोर अन्याय और पशुवत् व्यवहार मुझे असह्य है। आप सच मानिए, मेरे लिए यही कुछ कम नहीं है कि लालबिहारी को कुछ दंड नहीं देता।

अब बेनीमाधव सिंह भी गरमाये। ऐसी बातें और न सुन सके। बोल- लालबिहारी तुम्हारा भाई है। उससे जब कभी भूल-चूक हो, उसके कान पकड़ो लेकिन.....

श्रीकंठ- लालबिहारी को मैं अब अपना भाई नहीं समझता।

बेनीमाधव सिंह- स्त्री के पीछे?

श्रीकंठ- जी नहीं, उनकी क्रूरता और अविवेक के कारण।

दोनों कुछ देर चुप रहे। ठाकुर साहब लड़के का क्रोध शांत करना चाहते थे, लेकिन यह नहीं स्वीकार करना चाहते थे कि लालबिहारी ने कोई अनुचित काम किया है। इसी बीच में गाँव के और कई सज्जन हुक्के-चिलम के बहाने वहाँ आ बैठे। कई स्त्रियों ने जब यह सुना कि श्रीकंठ पत्नी के पीछे पिता से लड़ने को तैयार हैं, तो उन्हें बड़ा हर्ष हुआ। दोनों पक्षों की मधुर वाणियाँ सुनने के लिए उनकी आत्माएँ तिलमिलाने लगीं। गाँव में कुछ ऐसे कुटिल मनुष्य भी थे, जो इस कुल की नीतिपूर्ण गति पर मन ही मन जलते थे। वे कहा करते थे- श्रीकंठ अपने बाप से दबता है, इसीलिए वह दब्बू है। उसने विद्या पढ़ी, इसलिए वह किताबों का कीड़ा है। बेनीमाधव सिंह उनकी सलाह के बिना कोई काम नहीं करते, यह उनकी मूर्खता है। इन महानुभावों की शुभकामनाएँ आज पूरी होती दिखायी दीं। कोई हुक्का पीने के बहाने और कोई लगान की रसीद दिखाने आकर बैठ गया। बेनीमाधव सिंह पुराने आदमी थे। इन भावों को ताड़ गये। उन्होंने निश्चय किया चाहे कुछ ही क्यों न हो, इन द्रोहियों को ताली बजाने का अवसर न दूँगा। तुरंत

कोमल शब्दों में बोले- बेटा, मैं तुमसे बाहर नहीं हूँ। तुम्हारा जो जी चाहे करो, अब तो लड़के से अपराध हो गया।

इलाहाबाद का अनुभव-रहित झल्लाया हुआ ग्रेजुएट इस बात को न समझ सका। उसे डिबेटिंग-क्लब में अपनी बात पर अड़ने की आदत थी, इन हथकंड़ो की उसे क्या खबर? बाप ने जिस मतलब से बात पलटी थी, वह उसकी समझ में न आया। बोला- लालबिहारी के साथ अब इस घर में नहीं रह सकता।

बेनीमाधव सिंह- बेटा, बुद्धिमान लोग मूर्खों की बात पर ध्यान नहीं देते। वह बेसमझ लड़का है। उससे जो कुछ भूल हुई, उसे तुम बड़े होकर क्षमा करो।

श्रीकंठ- उसकी इस दुष्टता को मैं कदापि नहीं सह सकता। या तो वही घर में रहेगा या मैं ही। आपको यदि वह अधिक प्यारा है, तो मुझे विदा कीजिए, मैं अपना भार आप सँभाल लूँगा। यदि मुझे रखना चाहते हैं तो उससे कहिए, जहाँ चाहे चला जाये। बस यह मेरा अंतिम निश्चय है।

लालबिहारी सिंह दरवाजे की चौखट पर चुपचाप खड़ा बड़े भाई की बातें सुन रहा था। वह उनका बहुत आदर करता था। उसे कभी इतना साहस न हुआ था कि श्रीकंठ के सामने चारपाई पर बैठ जाए, हुक्का पी ले या पान खा ले। बाप का भी वह इतना मान न करता था। श्रीकंठ का भी उस पर हार्दिक स्नेह था। अपने होश में उन्होंने कभी उसे घुड़का तक न था। जब वह इलाहाबाद से आते, तो उसके लिए कोई न कोई वस्तु अवश्य लाते। मुगदर की जोड़ी उन्होंने ही बनवा दी थी। पिछले साल जब उसने अपने से ड्योढ़े जवान को नागपंचमी के दिन दंगल में पछाड़ दिया, तो उन्होंने पुलकित होकर अखाड़े में ही जाकर उसे गले से लगा लिया था, पाँच रूपये के पैसे लुटाये थे। ऐसे भाई के मुँह से आज ऐसी ह्रदय-विदारक बात सुन कर लालबिहारी को बड़ी ग्लानि हुई। फूट-फूट कर रोने लगा। इसमें संदेह नहीं कि अपने किये पर पछता रहा था।

भाई के आने से एक दिन पहले से उसकी छाती धड़कती थी कि देखूँ भैया क्या कहते हैं। मैं उनके सम्मुख कैसे जाऊँगा, उनसे कैसे बोलूँगा, मेरी आँखें उनके सामने कैसे उठेंगी। उसने समझा था कि भैया मुझे बुलाकर समझा देंगे। इस आशा के विपरीत आज उसने उन्हें निर्दयता की मूर्ति बने हुए पाया। वह मूर्ख था। परन्तु उसका मन

कहता था कि भैया मेरे साथ अन्याय कर रहे हैं। यदि श्रीकंठ उसे अकेले में बुला कर दो-चार बातें कह देते; इतना ही नहीं दो-चार तमाचे भी लगा देते तो कदाचित् उसे इतना दुःख न होता; पर भाई का यह कहना कि अब मैं इसकी सूरत नहीं देखना चाहता, लालबिहारी से सहा न गया। वह रोता हुआ घर आया। कोठरी में जाकर कपड़े पहने, आँखें पोंछी, जिसमें कोई यह न समझे कि रोता था। तब आनंदी के द्वार पर आकर बोला- भाभी, भैया ने निश्चय किया है कि वह मेरे साथ घर में न रहेंगे। अब वह मेरा मुँह नहीं देखना चाहते, इसलिए अब मैं जाता हूँ। उन्हें फिर मुँह न दिखाऊँगा। मुझसे जो कुछ अपराध हुआ, उसे क्षमा करना।

यह कहते-कहते लालबिहारी का गला भर आया।

जिस समय लालबिहारी सिंह सिर झुकाये आनंदी के द्वार पर खड़ा था, उसी समय श्रीकंठ सिंह भी आँखें लाल किये बाहर से आये। भाई को खड़ा देखा, तो घृणा से आँखें फेर लीं और कतरा कर निकल गये। मानो उसकी परछाहीं से दूर भागते हों।

आनंदी ने लालबिहारी की शिकायत तो की थी; लेकिन अब मन में पछता रहती थी। वह स्वभाव से ही दयावती थी। उसे इसका तनिक भी ध्यान नहीं था कि बात इतनी बढ़ जायेगी। वह मन में अपने पति पर झुँझला रही थी कि यह इतने गरम क्यों होते हैं। उस पर यह भय भी लगा हुआ था कि कहीं मुझसे इलाहाबाद चलने को कहें, तो कैसे क्या करूँगी। इस बीच में जब उसने लालबिहारी को दरवाजे पर खड़े यह कहते सुना कि अब मैं जाता हूँ मुझसे जो कुछ अपराध हुआ, क्षमा करना, तो उसका रहा-सहा क्रोध भी पानी हो गया। वह रोने लगी। मन का मैल धोने के लिए नयन-जल से उपयुक्त और कोई वस्तु नहीं है।

श्रीकंठ को देखकर आनंदी ने कहा- लाला बाहर खड़े बहुत रो रहे हैं।

श्रीकंठ- तो मैं क्या करूँ?

आनंदी- भीतर बुला लो। मेरी जीभ में आग लगे। मैंने कहाँ से यह झगड़ा उठाया।

श्रीकंठ- मैं न बुलाऊँगा।

आनंदी- पछताओगे। उन्हें बहुत ग्लानि हो गयी है, ऐसा न हो, कहीं चल दें।

श्रीकंठ न उठे। इतने में लालबिहारी ने फिर कहा- भाभी, भैया से मेरा प्रणाम कह दो। वह मेरा मुँह नहीं देखना चाहते; इसलिए मैं भी अपना मुँह उन्हें न दिखाऊँगा।

लालबिहारी इतना कह कर लौट पड़ा और शीघ्रता से दरवाजे की ओर बढ़ा। अंत में आनंदी कमरे से निकली और उसका हाथ पकड़ लिया। लालबिहारी ने पीछे फिर कर देखा और आँखों में आँसू भरे बोला- मुझे जाने दो।

आनंदी- कहाँ जाते हो?

लालबिहारी- जहाँ कोई मेरा मुँह न देखे।

आनंदी- मैं न जाने दूँगी?

लालबिहारी- मैं तुम लोगों के साथ रहने योग्य नहीं हूँ।

आनंदी- तुम्हें मेरी सौगंध, अब एक पग भी आगे न बढ़ाना।

लालबिहारी- जब तक मुझे यह न मालूम हो जाय कि भैया का मन मेरी तरफ से साफ हो गया, तब तक मैं इस घर में कदापि न रहूँगा।

आनंदी- मैं ईश्वर को साक्षी देकर कहती हूँ कि तुम्हारी ओर से मेरे मन में तनिक भी मैल नहीं है।

अब श्रीकंठ का हृदय भी पिघला। उन्होंने बाहर आकर लालबिहारी को गले से लगा लिया। दोनों भाई खूब फूट-फूट-कर रोये। लालबिहारी ने सिसकते हुए कहा- भैया, अब कभी मत कहना कि तुम्हारा मुँह न देखूँगा। इसके सिवा आप जो दंड देंगे, मैं सहर्ष स्वीकार करूँगा।

श्रीकंठ ने काँपते हुए स्वर से कहा- लल्लू! इन बातों को बिलकुल भूल जाओ। ईश्वर चाहेगा, तो फिर ऐसा अवसर न आवेगा।

बेनीमाधव सिंह बाहर से आ रहे थे। दोनों भाइयों को गले मिलते देखकर आनंद से पुलकित हो गये। बोल उठे- बड़े घर की बेटियाँ ऐसी ही होती हैं। बिगड़ता हुआ काम बना लेती हैं।

गाँव में जिसने यह वृत्तांत सुना, उसी ने इन शब्दों में आनंदी की उदारता को सराहा- 'बड़े घर की बेटियाँ ऐसी ही होती है।'

भारतीय संगीत - एक परिचय

श्रीकुमार सी, रक्षा मानकीकरण सेल, आवड़ी

संगीत जीवन के हर क्षेत्र में विद्यमान है। सामान्य जीवन में जब हम नहाते-धोते, खाते-पीते हैं, उनकी ध्वनि व लय में भी संगीत रहता है। मनुष्य ने अपने ही शरीर के अंदर विद्यमान दिल और फेफड़ा जैसे अंगों के संचलन से ताल का पहला सबक सीखा था। चिड़ियों की आवाज, चलती हुए हवा की आवाज, बहते हुए पानी की आवाज इत्यादि मनुष्य को संगीत का आस्वादन कराते हैं। विभिन्न परिस्थितियों में विभिन्न प्रकार के कार्य करते हुए मनुष्य ने मानसिक सुख प्राप्ति के लिए संगीत को अपने जीवन में प्रथम स्थान दिया है।

भारतीय संगीत की बहुत प्राचीन परम्परा रही है। भारतीय संगीत का प्रारंभ वैदिक काल से भी पूर्व का है। इस संगीत का मूल स्रोत्र वेदों को माना गया है। हिंदू परम्परा में ऐसा मानना है कि ब्रहमा ने नारद मुनि को संगीत का वरदान दिया था।

पंडित शारंगदेव कृत "संगीत रत्नाकर" ग्रंथ में भारतीय संगीत की परिभाषा "गीतम् वादयम् तथा नृत्यम् त्रयम् संगीतमुच्यते" कहा गया है अर्थात् गायन, वाद्य-वादन एवम् नृत्य, तीनों कलाओं का समावेश संगीत है। तीनों स्वतंत्र कला होते हुए भी एक-दूसरे की पूरक हैं।

भारतीय संगीत के दो प्रकार प्रचलित हैं: प्रथम, कर्नाटक गायन शैली जो दक्षिण भारतीय राज्यों में प्रचलित है और द्वितीय हिंदुस्तानी गायन शैली जो शेष भारत में लोकप्रिय है। भारतवर्ष की सभी धार्मिक एवम् सामाजिक परंपराओं में संगीत को भारतीय संस्कृति की आत्मा माना गया है। वैदिक काल में आध्यात्मिक संगीत को मार्गी तथा लोक संगीत को 'देशी' कहा जाता था। कालांतर में यही शास्त्रीय और लोक संगीत के रूप में प्रचलित हुए।

भारतीय संगीत का आधार सामवेद है। उस जमाने में सामवेद के मंत्रों का उच्चारण सिर्फ दो स्वर में होता था- 'रि' और 'नि'। 'रि' को 'उदातम्' और 'नि' को 'अनुदातम्' कहा जाता था। इसके बाद वर्षों की खोज़ के बाद इन दोनों स्वर के बीच में 'स' आने

लगा, जिसको 'स्वरित्म' कहते थे। उसके बाद 'ग', 'ध', 'म', 'प' इत्यादि चार स्वर और मिलकर शुद्ध सप्तक बन गए। इन सात शुद्ध स्वर सप्तक को सात सप्तक भी कहते हैं क्योंकि सामवेद मंत्रों का उच्चारण इन्हीं स्वरों में होता था। वैदिक काल में सामवेद के मंत्रों का उच्चारण सामगान या सामसप्तक के अनुसार किया जाता था। गुरू-शिष्य परम्परा के अनुसार, शिष्य को गुरू से वेदों का ज्ञान मौखिक ही प्राप्त होता था व उनमें किसी प्रकार के परिवर्तन की संभावना से मनाही थी। इस तरह प्राचीन समय में वेदों के संगीत का कोई लिखित रूप न होने के कारण उनका मूल स्वरूप लुप्त होता गया।

भारतीय संगीत के सात शुद्ध स्वर इस प्रकार है

षड्ज - (स)

ऋषभ - (रि)

गंधार - (ग)

मध्यम - (म)

पंचम - (प)

धैवत - (ध)

निषाद - (नि)

शुद्ध स्वर से ऊपर या नीचे विकृत स्वर नहीं होते। रि, ग, ध और नि के विकृत स्वर नीचे होते हैं और उन्हें कोमल कहा जाता है। 'म' का विकृत स्वर ऊपर होता है और उसे तीव्र कहा जाता है। समकालीन भारतीय शास्त्रीय संगीत में ज्यादातर ये बारह स्वर इस्तेमाल किए जाते हैं। पुरातन काल से ही भारतीय स्वर-सप्ताह संवाद-सिद्ध हैं। महर्षि भरत ने इसी के आधार पर 22 श्रुतियों का प्रतिपादन किया था जो केवल भारतीय शास्त्रीय संगीत में विशेषतः शुद्ध स्वर से ऊपर या विकृत स्वर से नीचे आती हैं। सात शुद्ध स्वर 22 श्रुतियों में निम्न प्रकार से मिले हुए हैं:-

स-4, रि-3, ग-2, म-4, प-4, ध-3, नि-2

भारतीय संगीत का इतिहास करीब 3000 साल पुराना है जो दुनिया में सबसे पुराना है। पाश्चात्य संगीतकार मारगरेट कासिन्स ने इस बात को स्वीकार किया है।

कर्नाटक और हिन्दुस्तान गायन शैली के आधार नियम और तत्व एक ही हैं लेकिन गाने के तरीके भिन्न हैं। मुगल बादशाहों अपने जमानें में बहुत सारे अरब और पर्शियन देशों से मशहूर गायकों को अपने दरबारों में बुलाकर संगीत गायन का आयोजन करते थे और जिससे हमारे भारतीय संगीत पर अरब और पर्शियन संगीत का प्रभाव पड़ा। यह बाद में हिन्दुस्तानी गायन शैली में रूपान्तरित हो गया।

कर्नाटक गायन शैली में पूर्ण रूप से 72 आधार राग होते हैं जिनको 'मेलकर्ता राग' कहा जाता है और हिन्दुस्तानी में मुख्य राग 10 होते हैं जिनको 'थाह' बोला जाता हैं। इनका फर्क सिर्फ नाम में है और ये सभी 72 मेलकर्ता रागों में शामिल हैं। उदाहरण के लिए हिन्दुस्तानी राग 'यमन' वही राग है जिसको कर्णाटक गायन शैली में 'मेचकल्याणी' कहते हैं। (65वां मेलकर्ता)।

भारतीय संगीत को तीन भागों में बांटा जा सकता हैः-

(i) मार्गी संगीत या शास्त्रीय संगीत।

(ii) हिंदुस्तानी एवम् कर्नाटक उपशास्त्रीय संगीत- हिंदुस्तानी गायन शैली मूलतः उत्तर भारत में प्रचलित थी जिसमें ध्रुपद, ख्याल, टप्पा, चतुरंग, तराना, गजल आदि प्रमुख गायन शैली हैं। कर्नाटक गायन शैली मूलतः दक्षिण भारत में प्रचिलित थी जिसके जनक पुरन्दरदास को माना जाता है। कर्नाटक गायन की प्रचलित शैली है- वर्णन, चावाली, तिल्लाना, पल्लवी इत्यादि।

(iii) सुगम संगीत- इसकी प्रमुख प्रचलित गायन शैली हैं- गजल, कव्वाली, भजन, कीर्तन, चित्र पट संगीत, रविन्द्र संगीत इत्यादि।

पुरन्दर दास, श्री त्यागराजा, मुत्थुस्वामी दीक्षितर, श्यामा शास्त्री जैसे महान संगीतकारों ने अपनी अमूल्य एवम् मनोहर रचनाओं से भारतीय संगीत को संपुष्ट बनाने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है और इसी लिए 3000 साल के बाद भी भारतीय संगीत वैसा का वैसा भारतीय संस्कृति का उत्तम उदाहरण बनकर प्रशोभित हो रहा है।

प्रकृति से छेड़छाड़ का परिणाम रहस्मय रोग

हवलदार रामजी यादव, रक्षा मानकीकरण सेल, आवड़ी

आधुनिक युग में प्रकृति से छेड़छाड़ करके दुनिया को काफी गर्व महसूस होता है। ऐसा प्रतीत होता है कि हमने काफी सफलता पा ली है। इसी तरह प्रत्येक क्षेत्र में प्रकृति के विपरीत कार्य हो रहा है। जब इस दुनिया का आरंभ हुआ होगा। उस समय लोगों की जिंदगी किस प्रकार की रही होगी? आज हम सिर्फ कल्पना मात्र ही कर सकते हैं। आरम्भ में लोग प्रकृति पर शत्-प्रतिशत आश्रित रहे होंगे। जरूरत की सारी वस्तुओं को उसी रूप में प्रयोग किया जाता होगा, जिस रूप में प्रकृति हमें वरदान रूप में देती होगी। आज हमने लगभग सभी वस्तुओं को फिल्टर कर-करके उसके प्राकृतिक गुणों को समाप्त कर जहर सा बना दिया है।

हिन्दू धर्म ग्रंथों में प्रकृति और पर्यावरण संरक्षण के लिए प्रकृति-पूजन का नियम बताया गया है तथा पेड़-पौधों, नदी-पर्वत, ग्रह-नक्षत्र, अग्नि और वायु सहित प्रकृति के विभिन्न रूपों को मानवीय रिश्तों के साथ जोड़ा गया है। यहां पेड़ की तुलना संतान से की गई है। नदी और पृथ्वी को मां तथा ग्रह-नक्षत्र, पहाड़ एवं वायु को देवरुप माना गया है। इनकी हमें रक्षा करनी चाहिए परंतु हम अपने ही स्वार्थ को पूरा करने हेतु गलत कार्य करके प्रकृति से खिलवाड़ कर रहे हैं। इसके परिणाम स्वरूप न सिर्फ पर्यावरण बिगड़ने से तरह-तरह के प्राकृतिक प्रकोप, भूंकप, बेमौसमी वर्षा, बाढ़, आकशीय बिजली गिरने तथा अन्य प्राकृतिक आपदाओं के चलते भारी विनाश हो रहा है बल्कि लोग गम्भीर बीमारियों का शिकार हो रहे हैं।

हमारी दुनिया आज यह सत्यापित करने में लगी है कि हम प्रकृति के विरूद्ध चलकर भी आसानी से एवं आधुनिक ढंग से जीवन यापन कर सकते हैं। गर्मी के मौसम में हमें ठंडक चाहिए, ठंडक में हमें गर्मी का एहसास होना चाहिए। फिर मानव ने 'एसी' तथा ' हीटर' जैसे उपकरणों का आविष्कार किया। 'कोल्ड स्टोर' में खाद्य सामाग्री को रखकर वर्षों तक उपयोग करना हमारी जरूरत या मजबूरी बन गई है। पैकेट में बंद खाने-पीने की चीजों को हमें खाने में बेहद खुशी होती है क्योंकि वह हमें आसानी से

उपलब्ध हो जाता है। जितनी भी पैकट बंद खाने की चीजें हैं, उसमें कुछ केमिकल की मात्रा होती है जिससे वे लम्बे दिनों तक खराब नहीं होती।

साधारण दूध 12 घंटे में बिना गर्म किए खराब हो जाता है परन्तु पैकेट बंद दूध छः महीनों तक खराब नहीं होता यानि हमने केमिकल के बल पर उसे छः महीने तक खराब नहीं होने दिया। कच्चे फलों एवं सब्जियों को जल्दी उपयोग के लायक बना दिया जाता हैं। यह सब क्या है? यह पर्यावरण के साथ खिलवाड़ को प्रदर्शित करता है।

हम यह जानते है कि प्रकृति के साथ न चलने से काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ेगा परंतु हमारी काफी हद तक कृत्रिम चीजों पर निर्भरता बढ़ चुकी है। जैसे-वायुयान, रेलवे, स्वास्थ्य विभाग, कल-कारखानों के अपशिष्ट पदार्थों को धरातल पर जगह देना। परिणामस्वरूप हमें रहस्यमय एवं संक्रामक बीमारियों का सामना करने के लिए तैयार रहना होगा।

प्रकृति के इसी प्रकोप की ताजा मिसाल कोविड है जिससे आज पूरी दुनियां त्रस्त है। आंध्र प्रदेश के 'एलुरू' इलाके में फैली एक रहस्यमय बीमारी सामने आई जिसके परिणामस्वरूप अब तक इस रोग से काफी लोग पीड़ित हो चुके हैं। इन लोगों को घबराहट, उल्टियां, सिरदर्द तथा पीठ मे दर्द होता है। अचानक उन्हें 3 से 5 मिनट तक जारी रहने वाले मिर्गी जैसे दौरे पड़ने लगते हैं और वे चक्कर आने से बेहोश होकर गिर जाते है। जब 'एम्स' की टीम वहां पहुंची तो जांच में पता चला कि शहर में पीने के पानी और दूध में 'निक्कल' और 'सीसा' (जस्ता) जैसे भारी तत्वों की मौजूदगी है। 'एलरू' में गोदावरी तथा कृष्णा नदियों की नहरों से कारखानों, अस्पतालों, घरों आदि में पानी की सप्लाई की जाती है।

यह केवल एक राज्य तथा एक देश की बात नहीं बल्कि विश्व में बड़े पैमाने पर विभिन्न रूपों में प्रकृति और पर्यावरण से छेड़छाड़ जारी है। इसमें अधिक बच्चे पैदा कर जनसंख्या का संतुलन बिगाड़ना, अधिक उपज के लिए अंधाधुध खादों और विषैले कीटनाशकों का प्रयोग, नदियों तथा अन्य जल स्त्रोतों में कल-कारखानों और चमड़ा रंगने वाली इकाइयों का जहरीला पानी छोड़ना, वनों का कटाव शामिल है। अतः विभिन्न आपदाओं के रूप में प्रकृति रह-रह कर मानव जाति को चेतावनी दे रही है कि "अभी

मुझसे छेड़-छाड़ बंद कर दो और संभल जाओं, वर्ना मेरा इंतकाम पहले से भी अधिक भयानक और विनाशकारी होगा।” जितना संभव हो सके प्रकृति के अनुरूप कार्य करना चाहिए। इससे विश्व को इन तेज एवं विनाशकारी बीमारियों से राहत मिलेगी। मैं इस लेख के माध्यम से बताना चाहता हूँ कि प्राकृतिक चीजों से प्रथम चरण में बने कृत्रिम रूप का ही प्रयोग करें, एक से अधिक चरणों के कृत्रिम रूपों का बिल्कुल भी प्रयोग न करें। उदाहरण के लिए गन्ना से गुड़ बनाकर उसका प्रयोग ठीक है लेकिन गुड़ के बाद रिफाइन की गई चीनी का प्रयोग बिल्कुल भी ठीक नही हैं। सफेद चीनी को ‘रिफांइड शुगर’ भी कहा जाता है। इसे रिफाइन करने के लिए सल्फर डाई-ऑक्साइड, फास्फोरिक एसिड, कैल्शियम डाई-ऑक्साइट का उपयोग किया जाता है। रिफाइनिंग के बाद चीनी में मौजूद विटामिन, मिनरल, प्रोटीन, एंजाइम जैसे पोषक तत्व नष्ट हो जाते हैं।

‘रिफाइडं चीनी’ को खाने से मस्तिष्क में रासायनिक क्रियाएं होने से सेरेटोनिन का स्राव हो सकता है जिससे स्वभाव में चिड़चिड़ापन, अवसाद जैसे लक्षण आते हैं। इसमें सुक्रोज होता है। इसकी अधिक मात्रा शरीर के लिए नुकसानदायक होती है। अधिक मात्रा में चीनी का इस्तेमाल वसा से भी ज्यादा नुकसान करती है। इससे मधुमेह की दिक्कत होती है। चीनी या इससे बनी चीजें खाने के बाद मुंह साफ करना चाहिए। ये दांतों के सुरक्षा कवच को नुकसान पहुंचाती हैं। हमें चीनी की बजाय गुड़, खजूर, शहद, फलों का रस प्रयोग करना चाहिए।

इसी तरह हमें ध्यान रखना चाहिए कि ज्यादा रिफाइन वाली चीजें खतरनाक होती हैं। अभी हमने सिर्फ चीनी के ऊपर प्रकाश डाला है, इसी प्रकार और भी वस्तुएं हैं उनका भी न्यूनतम प्रयोग करें। अच्छा खायें, मेहनत करें, खुश रहें, तनाव मुक्त रहें, प्रकृति और पर्यावरण को बचाएं और बीमारियों को दूर-भगाएं।

आज राष्ट्रभाषा की स्थिति के संबंध में विवाद नहीं है। जहां तक हिंदी का प्रश्न है, वह अनेक प्रादेशिक भाषाओं की सहोदरा और एक विस्तृत विविधता भरे प्रदेश में अनेक देशज बोलियों के साथ पल कर बड़ी हुई है।

- महादेवी वर्मा

संकल्प

नायक अभिषेक कुमार, रक्षा मानकीकरण सेल, बदरपुर

हम हिन्दुस्तानी हैं, संकल्प लेना आता है
लेते अगर संकल्प तो, हमें निभाना आता है
हमने एक संकल्प लिया है, तुम भी एक संकल्प लो
महामंत्र प्रधानमंत्री का, घर में रहे, बाहर न जाएं
आओ हम सब संकल्प लें।

घर में रहें, कोरोना को हराएं, अपने को स्वस्थ रखें
औरों को भी स्वस्थ बनाएं
भारत बने विश्व गुरू, सुपर पावर इसको बनाएं
महामंत्र प्रधानमंत्री का, घर में रहें, बाहर न जाएं
आओ हम सब संकल्प लें।

जाने हमें बचानी है, करनी नहीं मनमानी है
घर में रहें, कुछ सुने और सुनाएं
बाहर बिल्कुल भी न जाएं
हाथ धोवे और सबको धुलवाएं
हमने संकल्प लिया है, तुम भी संकल्प लो
महामंत्र प्रधानमंत्री का, घर में रहें, बाहर न जाएं
आओ हम सब संकल्प लें।

हमने अपने संविधान में हिंदी को राजभाषा के रूप में स्वीकार किया है इसलिए हमें देखना है कि सरकारी कामकाज में हिंदी का अधिक से अधिक प्रयोग हो।

- राजीव गांधी

सब निःशुल्क है

सूबेदार प्रदीप कुमार, रक्षा मानकीकरण सेल, बदरपुर

यह नदियों का मुल्क है, पानी भी भरपूर है
बोतल में बिकता है, पंद्रह-बीस रूपये शुल्क है।
यह गरीबों का मुल्क है, जनसंख्या भी भरपूर है।
परिवार नियोजन मानते नहीं, नसबंदी निःशुल्क है।

यह अजीब मुल्क है, निर्बलों पर हर शुल्क है।
अगर आप हो बाहुबलि, हर सुविधा निःशुल्क है।
यह अपनो ही का मुल्क है, कर कुछ सकते नहीं
कह कुछ सकते नहीं, बोलना निःशुल्क है।

यह शादियों का मुल्क है, दान दहेज भी खूब है
शादी करने को पैसा नहीं, कोर्ट मैरिज निःशुल्क है।
यह पर्यटन का मुल्क है, रेल भी खूब है।
बिना टिकट पकड़े गए, रोटी कपड़ा निःशुल्क है।

यह अजीब मुल्क है, हर जरूरत पर शुल्क है।
ढूंढकर देते हैं लोग, सलाह निःशुल्क है।
यह आवाम का मुल्क है, रहकर चुनने का हक है
वोट देने जाते नही, मतदान निःशुल्क है।

शिक्षकों का देश है, पाठशालाएं भी खूब हैं।
शिक्षकों के विचारों पर चलते नहीं
स्कूल में पढ़ाई, खाना व पोशाक निःशुल्क है।

एकता ही देश का बल

ज़रूरी है हिंदी का संबल

माता-पिता की स्तुति

भूदेव बी. के. प्रजापति, रक्षा मानकीकरण सेल, बदरपुर

माता-पिता को नमन करूं मैं, वे तो हैं वरदान।
उनके ही कारण हुआ, जीवन मेरा आसान।।
सच्चाई के सार हैं वे और त्याग आगवर।
उनके ही कारण मेरा, जगमग है संसार।।

माता-पिता सूरज से लगें, जैसे मोहक हितकर धूप।
सत्य-आचरण से सुन्दर करें सदा बच्चों का रूप।।
ज्ञान बिना हम सब बने साक्षात अन्धकार।
कोटिक नमन माता-पिता को देते जो उजियार।।

जीवन मूल्यों का करें कदम-कदम उच्चार।
द्वेष-तिमिर पल में हरे, सत्य भरा आचार।।
मानव तब मानव बने, माता-पिता दे जब ज्ञान।
उनकी कृपा से ही सजे मानवता उद्यान।।
जीवन महकता है हमारा और निखरती है शान।
माता-पिता के कारण मिले कदम-कदम सम्मान।।

"सरलता, बोधगम्यता और शैली की दृष्टि से विश्व की भाषाओं में हिंदी महानतम स्थान रखती है"

- अमरनाथ झा

"हे भव्य भारत ही हमारी मातृभूमि हरी-भरी।
हिंदी हमारी राष्ट्रभाषा और लिपि है नागरी"

- मैथिलीशरण गुप्त

हिंदी का गौरव

भूदेव बी. के. प्रजापति, रक्षा मानकीकरण सेल, बदरपुर

हिन्दुस्तान हमारा देश, एकता यहां की परिभाषा है।
गर्व है हमें हिंदी पर, हमारी ये राजभाषा है।
कोई भाषा बुरी नहीं, पर क्यों हमने अपनी मर्यादा खो दी है।
न जाने क्यों जागृति के नाम पर स्व भाषा ही डुबो दी है।
कुछ लोगों के लिए, हिंदी का कोई अस्तित्व नहीं।

अपना हर पल हिंदी कर लो, एक दिन से कुछ न होगा।
पावन हिंदी तन-मन में भर लो, तब ये सपना सच होगा।
कुछ लोग यहां पर मैंने देखे, जो हिंदी को पिछड़ी भाषा बतलाते हैं।
और इसी तरह हम हिंदी की, सक्षमता को खोते जाते हैं।।

हिंदी में रस, छंद, अलंकार की महिमा बड़ी अनूठी है।
ये गुण और किसी भाषा में न मिलते सारी बातें झूठी हैं।।
हिन्दुस्तानी होने के नाते, हिंदी की शान समझ में आती है।
देवों की वाणी लगती है, शुभ वरदान समझ में आती है।।
संस्कृत की पावन धारा से, इसने नव आकार लिया।
हिंदी ने ही हमको एक रखा और आजादी का उपहार दिया।।

भारत की पावन माटी में, जाने कितनी भाषाएं हैं।
पर देश को केवल हिंदी से ही कई उज्ज्वल आशाएं हैं।।
भारतेन्दु और प्रसाद जी ने, हिंदी को कई रत्नों का भण्डार दिया।
और विवेकानन्द ने इसका, सात-समुन्दर के बाहर प्रसार किया।।

हिंदी भाषा इतनी सहज, जो सबके मन को भाती है।
इसमें इतना अपनापन है कि सबके मन को छू जाती है।
मंत्र मुग्ध हो जाते हैं सब, जब हिंदी स्वर झंकार दिया।
आओ हम कोश बढाएं हिंदी का, जिसने सपना साकार किया।।
पढ़ा-सुना होगा कवियों को, पर भारत जैसा कावित्य नहीं।
पढ़े होंगे साहित्य जहां के, पर हिंदी जैसा साहित्य नहीं।।
भारत में जितने पर्व हैं, किसी देश मे पर्व नहीं।
वह भारतवासी भी क्या भारतवासी, जिसको 'हिंदी' पर गर्व नहीं।।

कामयाबी कभी बड़ी नहीं होती,
पाने वाले हमेशा बड़े होते हैं।

दरार कभी बड़ी नहीं होती,
भरने वाले हमेशा बड़े होते हैं।

इतिहास के हर पन्ने पर लिखा है-
दोस्ती कभी बड़ी नहीं होती।

दोस्ती निभाने वाले हमेशा बड़े होते हैं।

कोराना तो है एक बहाना

जयराम वर्मा, रक्षा मानकीकरण सेल, बदरपुर

कोरोना तो है एक बहाना
लक्ष्य है खुद को खुद के पास लाना
बहुत घूम लिए तुम बाहर
अब कुछ समय है घर पर बिताना
कोरोना तो है एक बहाना

दूसरे ही दूसरे से मिलते रहे
कभी अपने आप से भी मिलो
गुल बनकर बाहर ही खिलते रहे
कभी अपने आँगन में भी खिलो
ये नया दौर है उसी का नजराना
कोरोना तो है एक बहाना

पैर ठहर नहीं रहे थे जमीन पर
उड़ रहे थे ऊंचे आसमान पर
थम नहीं रहे थे चकाचौंध के चक्के
रह गए न एक झटके में भौंचके
बस था यही अहसास कराना
कोरोना तो है एक बहाना

चार दिन की जिन्दगी को
मान बैठे थे स्थाई बसेरा
इसी लिए घर में कैद कर के
हंस रहा है संसारी रैन-बसेरा
अब कभी न यूं इतराना
कोरोना तो है एक बहाना

जिन रेल, हवाई और सड़क
परिवहन पर था बहुत गुमान
सबसे पहले साथ छोड़कर
वे ही हुए अंजान
कभी पैरों की ताकत न झुठलाना
कोरोना तो है एक बहाना

सौ बात की एक बात
मुश्किल घड़ी में रहता नहीं कोई साथ
तुम तो हो कठपुतली
जिसकी डोर है किसी और के हाथ
जो समझे थे वही समझाना
कोरोना तो है एक बहाना।

सारे देश में एक प्रधान भाषा का प्रचार अब भी अत्यंत आवश्यक है और आगे भी अत्यंत आवश्यक होगा और वह भाषा हिंदी के सिवा और कोई नहीं हो सकती।

- पं. महावीर प्रसाद द्विवेदी

कोविड जमाना

हवलदार विनसेन्ट, रक्षा मानकीकरण सेल, बदरपुर

यूं तो एक जमाना था जब
हाथ में हाथ डालके चलते थे
और आज ऐसी मजबूरी है कि
एक हाथ की दूरी हम बनाएं हैं।

कभी होठों से मुस्कुराते थे
अब आँखों से मुस्कुरा देते हैं।
चेहरे से नहीं दिल की बात अब
पलकों के झपकों से पढ़ते हैं।

आजकल झोले से न लिपस्टिक
लड़कियां सेनिटाइजर निकालती हैं।
फेसवाश से मुंह धोने से अधिक
हथेली का अब शोधन करते हैं।

चुकाना पड़ेगा ऑक्सीजन
को भी मूल्य भविष्य में
पहचान लो, कल नहीं वो आज है
जिस दिन के आने से हम डरते हैं।

फिर कभी ना आये ऐसी महामारी

रश्मि शर्मा, रक्षा मानकीकरण सेल, बदरपुर

विश्व में चारों ओर देखों, छायी ये कैसी उदासी है,
जहां देखो त्राहि-त्राहि, कोरोना महामारी ने मचाई है।

इस महामारी में सबने कुछ न कुछ खोया है,
किसी से उसके अपने बिछुड़े, कितनों ने अपना घर छोड़ा है।

ऐसा मंजर देखकर आंखे भर आई हैं,
हे ईश्वर! फिर कभी ना आए ऐसी महामारी, जिसने इतनी तबाही मचाई है।

सोचा अब हम संभल गए, फिर कैसी ये दूसरी लहर आई हैं,
जिसने पहले से भी ज्यादा तबाही और चिंता फैलाई है।

चारों ओर ऑक्सीजन की कमी का ऐसा अंधकार छाया था,
वहीं ऑक्सीजन विक्रेताओं ने अंधी कमाई का जाल बिछाया था।

मानवता का ऐसा रूप देखकर दिल फिर फूट-फूट कर रोया है,
हे ईश्वर! फिर कभी ना आए ऐसी महामारी जिसने इतनी तबाही मचाई है।

न थी अनुमति अस्पतालों में किसी को अपनों से मिलने की,
जिंदगी भर ये कमी खलेगी, अपनों से बिछुड़ने की।

फिर आई एक ऐसी वैक्सीन, जिसे को-वैक्सीन/कोविशील्ड नाम दिया,
जिसने इस महामारी से हमें सुरक्षित बचाने का काम किया।

फिर से एक बार खुशी की लहर आई है।
मुंह पर मास्क, हाथ में सेनिटाइजर और दो गज की दूरी ने जान बचाई है।
हे ईश्वर! फिर कभी ना आए ऐसी महामारी, जिसने इतनी तबाही मचाई है।

लहरे तिरंगा कहे, देश के जवानवा से

सूबेदार उमेश चन्द्र वर्मा, प्रशासन (स्थापना) समूह

लहरे तिरंगा कहे,
देश के जवानवा से,
हमें ना झुकाना वीरों
चाहे जिया जाये।

मोर अपमानवा ना करीह,
कबहूँ सपनवा में,
हमें ना झुकाना वीरों,
चाहे जिया जाये।

हमरे खातीर लूट गईले,
माता के ललनवा,
हमरे खातीर लूट गईले,
बहीना के वीरनवा,

मोर अपमानवा ना करीह,
कबहूँ सपनवा में,
हमें ना झुकाना वीरों,
चाहे जिया जाये।

लहरे तिरंगा कहे,
देश के जवानवा से,
हमें ना झुकाना वीरों,
चाहे जिया जाये।

बहना ओ बहना, मेरी प्यारी बहना

सूबेदार उमेश चन्द्र वर्मा, प्रशासन (स्थापना) समूह

बहना ओ बहना, मेरी प्यारी बहना,
यूं ही सदा..... तुम खुश रहना।

तेरे सब दुःख, हो जाएं मेरे,
मेरे सब सुःख, हो जाएं तेरे,
जीवन में कभी, ना उदास होना।
यही प्रार्थना है, मेरी यही कामना,
यूं ही सदा.... तुम खुश रहना।

बहना ओ बहना.....
यूं ही सदा.....

करते हैं प्यार बहना, करते रहेंगे,
जब तक जीयेंगे, तेरी रक्षा करेंगे,
बहन-भाई के रिश्ते को, नजर लगे ना
यही प्रार्थना है, मेरी यही कामना,
यूं ही सदा..... तुम खुश रहना।

बहना ओ बहना.....
यूं ही सदा.....

रक्षा-सूत्र बांध बहना, तिलक है लगाया,
रक्षा बंधन का, त्यौहार है मनाया,
जीवन में कभी, ना हताश होना,
यही प्रार्थना है, मेरी यही कामना,
यूं ही सदा..... तुम खुश रहना।

बहना ओ बहना.....
यूं ही सदा.....

हे भोला भंडारी, सुन लो अरज हमारी

सूबेदार उमेश चन्द्र वर्मा, प्रशासन (स्थापना) समूह

हे भोला भण्डारी, सुन लो अरज हमारी।
हाथ जोड़ प्रभु भक्त पुकारे, सुन लो बात हमारी-2

हे शंकर त्रिपुरारी, सुन लो अरज हमारी।
भक्त खड़ा तेरे द्वारे बाबा, सुन लो बात हमारी-2

तुम्हीं सबके जन्मदाता, तुम्हीं भाग्य विधाता।
तुम्हीं सबके पालनहारी, आये शरण तिहारी-2

हे भोला भण्डारी, सुन लो अरज हमारी।
हाथ जोड़ प्रभु भक्त पुकारे, सुन लो बात हमारी-2

भोले बाबा तुम हो भोले, कहती है ये दुनिया सारी।
बड़े-बड़े हैं कष्ट जगत में, इसको दूर करो त्रिपुरारी-2

हे भोला भण्डारी, सुन लो अरज हमारी।
हाथ जोड़ प्रभु भक्त पुकारे, सुन लो बात हमारी-2

कौन है अपना कौन पराया, जीवन है सब मोह-माया।
माया-जाल के भवसागर से, सबकी नैया पार करा दो-2

हे भोला भण्डारी, सुन लो अरज हमारी।
उमेश खड़ा तेरे द्वारे प्रभु, सुन लो बात हमारी-2

विकास बन रहा है प्राकृतिक आपदाओं का कारण?

शीना ग्रोवर, सीएंडसी समूह

आर्थिक विकास पर्यावरणीय मुद्दों से कहीं अधिक गंभीर समस्या है। इंसान अपनी आर्थिक जरूरत के लिए नए-नए तरीके और साधनों का प्रयोग कर रहा है। वह बिना सोचे पेड़ काटे जा रहा है। जिस पेड़ ने उसके परिवार को छत दी, आज वह उसी पेड़ को काट कर उसकी जमीन पर घर, फैक्टरी इत्यादि का निर्माण कर रहा है। विकासशील देश वर्तमान में सभी लोगों के लिए आधारभूत सुविधाएं उपलब्ध कराने में ही असमर्थ हैं। गरीबों के लिए पर्यावरणीय संपदा उपयोग की पहली और सबसे आवश्यक वस्तु मानी जाती है जिसके दोहन द्वारा वे अपनी मूलभूत आवश्यकताएं पूरी करते हैं।

उच्च वर्ग के लोगों के पास सारे आधार हैं, इसलिए उन्हें लगता है कि जैसे मर्जी पर्यावरण का उपयोग करो। क्या फर्क पड़ेगा? इसलिए विकसित और विकासशील देशों के दृष्टिकोण में अंतर पाया जाता है। गरीब देशों के लिए पर्यावरणीय पदार्थों और उसकी भविष्य में होने ना होने की चिंताएं काफी बड़ी हो जाती हैं। मेरा मानना है कि जब इंसान के पास उसकी जरूरतों से अधिक सामान होता है तो वह उस चीज़ का फायदा उठाने लगता है। लेकिन प्रकृति तो सबकी है और हम सब प्राकृति के हैं, तो आप बताओ, क्या हम खुद को किसी के हाथों ऐसे व्यर्थ में ही खर्च होने देंगे? तो क्या हम सब मिल कर प्रकृति के सौंदर्य को और आकर्षक नहीं बना सकते? कुआँ जितना भी भरा क्यों न हो एक ना एक दिन खाली जरूर हो जाता है।

विकास अवश्य होना चाहिए। परंतु ऐसा विकास किस काम का जो हमें और हमारी आगे आने वाली पीढ़ी को और ज्यादा पीछे कर दे? मैं आए दिन टीवी, अखबार में पढ़ती हूं कि आर्थिक विकास में उत्तरोत्तर वृद्धि के साथ ही पर्यावरण संतुलन भी प्रभावित होता है।

जहां आर्थिक विकास मानव जीवन का अनिवार्य पहलू है, वहीं प्राकृतिक संतुलन अस्तित्व संरक्षण हेतु अपरिहार्य माना जाता है। मानव जाति को यह समझना होगा कि उसका जीवन प्रकृति से है और प्रकृति नहीं तो वे भी धीरे-धीरे गायब होने लगेगा। हमारी गतिविधियों के कारण जो प्राकृतिक समस्याएं उत्प्रेरित और उत्पन्न हो रही हैं, वह भविष्य में जन-जन को अलग रूप से अपनी आवश्यकता समझाएगी।

स्थायी विकास एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें संसाधनों के उपयोग, निवेश की दिशा, तकनीकी विकास के झुकाव और संस्थागत परिवर्तन का तालमेल वर्तमान एवं भविष्य की आवश्यकताओं के साथ बैठाया जाता है। अगर विकास स्थायी और सतत् न हो तो उनके परिणाम दूरगामी होते हैं। आमतौर पर घटित होने वाली कुछ आपदा यथा बाढ़, भूकप, सूखा, चक्रवात, सुनामी, भूस्खलन आदि ऐसी हैं जिनका मानवीय प्रभाव संबंधी आकलन बेहद आवश्यक है। अगर इंसान प्रकृति के संकेतों को नज़रअंदाज करता है तो प्रकृति अपना प्रकोप दिखाती है। उसके अलग-अलग प्रकोपों में आज कल फैला हुआ कोरोना वायरस भी है। रिपोर्ट के अनुसार यह वायरस एक वैपन यानी लड़ाई का पदार्थ था (या बनने वाला था) परंतु लेब से बाहर निकल गया और बस इंसान की तबाही का कारण बनता गया।

इसके कारण इंसान को काफी कुछ सहना पड़ रहा है। देखा जाए तो यह इसानों की ही गलती और प्राकृति का प्रकोप है जो इस तरह बरस रहा है। इस तरह के विकास के लालच में इंसान आगे जाने की बजाए 10 साल कम से कम पीछे आ गया है। इन सभी वजहों से जब इंसान अपने परिवार के साथ घर पर था, फैक्टरियां भी सब बंद थीं, प्रदूषण और शोर भी कम था तब हमारी प्रकृति कैसे चहक रही थी, हवा कितनी साफ थी और बादल अलग-अलग रूप-रंगों में प्रकट हो रहे थे। प्रकृति को ध्यान में रखते हुए अगर हम अपना कार्य करेगें तो सब खुश रहेंगे और ज्यादा खुशहाल समय बिता पाएंगे।

परंतु अगर इसी प्रकार प्रकृति के पेड़ो, पौधों को नष्ट किया जाएगा तो कैसे हम सब जिएगें। पेड़ न होने के कारण सूखा पड़ जाएगा, किसान अन्न कैसे उगाएगा? अवैध

खनन, नदियों का प्रदूषण, वातावरण में जहरीली गैसों में वृद्धि, तापमान में वृद्धि, भूमि प्रदूषण, ग्लेशियरों के पिंघलने आदि से जलवायु परिवर्तन का खतरा बढ़ा हैं। जल भूमि में नीचे जा रहा है और यह वर्तमान नगरीकरण की सबसे बड़ी समस्या है जिसके कारण बाढ़ का खतरा बढ़ता जा रहा है।

मेरा मानना है कि हमारे स्कूलों और काम करने वाली जगहों पर प्रकृति व उससे जुड़ी चीजों के बारे में जानकारी दी जाए ताकि लोगों को प्रेरणा मिल सके। अपना-अपना योगदान देने में हम अपने घरों से शुरुआत कर सकते हैं जिससे हमारी प्रकृति पर ज्यादा भार न पड़े।

कहा जाता है यदि आप किसी परिस्थिति को बदलना चाहते हैं तो पहले आप अपने अंदर वह बदलाव लाएं और फिर देखिए परिस्थिति अपने आप ठीक होने लगती है।

बेकार वस्तुओं को प्रकृति के लिए हम रिसाइकल कर सकते हैं। जो हमारे घरों में जो चीज़े अधिक हैं, उन्हें दान कर सकते हैं ताकि हमारे पास उतनी ही वस्तुएं हो जितनी हमें आवश्यकता है। हम दूध की प्लास्टिक थैली की बज़ाए ताजा दूध ला सकते हैं ताकि प्लास्टिक का प्रयोग कम हो। घर में हम अपने जन्मदिन पर (या घर में किसी भी अवसर पर) एक-दूसरे को पौधा उपहार में दे सकते हैं।

प्रस्तुत पंक्तियां मेरी प्रिय कविता से ली गई है। उम्मीद है आप सभी को पसंद आएगीः-

"संभल जाओ ऐ दुनिया वालो
वसुंधरा पे करो घातक प्रहार नहीं!
रब करता आगाह हर पल
प्रकृति पर करो घोर अत्याचार नहीं!!"

हिसाब

हवलदार सी कत्रन, रक्षा मानकीकरण सेल, बेंगलूरू

बादलों के पानी का हिसाब
समुद्र से कौन पूछेगा?

जिन्दगी एक किताब, रोज खुलता है एक पन्ना,
पन्नों का हिसाब किस्मत से कौन पूछेगा?

जो लम्हें रह गए पन्नों से चिपके ही,
उन्हें न जी पाने का हिसाब जिंदगी से कौन पूछेगा?

"भारत की राष्ट्रभाषा हिंदी ही होगी।"

"यह कहना गलत है कि दक्षिण की जनता हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाने के विरूद्ध है। दक्षिण भारत के भी राष्ट्रवादी भावना के लोग हिंदी को देश की राष्ट्रभाषा के रूप में स्वीकार करने के पक्ष में हैं। वे चाहते हैं कि कोई आम लिपि हो किंतु साथ ही उनका यह भी कहना है कि उनकी लिपि खत्म न हो।"

सुकून

कारपोरल दिलशाद, रक्षा मानकीकरण सेल, बेंगलूरू

जिसे भी देखो परेशान बहुत है।
खुशियां कम और अरमान बहुत हैं।।

पाने को कुछ नहीं, ले जाने को कुछ नहीं।
फिर भी उम्मीदों के आसमान बहुत हैं।।

उड़ जाएंगे एक दिन तस्वीर से रंगों की तरह।
फिर भी जिन्दगी जीने के अरमान बहुत हैं।।

समय की टहनी पर बैठे हैं परिंदों की तरह।
फिर भी कोई उड़ने को तैयार नहीं है।।

जरूरतों की फ़िक्र में आंखे जाग रही हैं।
बस इसी तरह हमारी जिन्दगी भाग रही है।।

दो वक्त की रोटी ढूंढने निकला था घर से दूर।
आज सुकून की तलाश में जिन्दगी गुजर रही है।।

विचारों का अजीर्ण, भोजन के अजीर्ण से कहीं बुरा है क्योंकि यह आत्मा को बिगाड़ देता है।

\- महात्मा गांधी

अच्छाई

वारंट ऑफिसर उमाकांत मोहंती, रक्षा मानकीकरण सेल, बेंगलूरू

दो भाई समुद्र के किनारे टहल रहे थे। दोनों में किसी बात को लेकर बहस हो रही थी। अचानक बड़े भाई ने छोटे भाई को थप्पड़ मार दिया। छोटे भाई ने कुछ नहीं कहा, सिर्फ रेत पर लिखा, “आज मेरे बड़े भाई ने मुझे मारा।” अगले दिन दोनों फिर समुद्र के किनारे घूमने निकले। छोटो भाई समुद्र में नहाने लगा, अचानक वो डूबने लगा। बड़े भाई ने उसे बचाया। छोटे भाई ने पत्थर पर लिखा, “आज मेरे बड़े भाई ने मुझे बचाया”। इस पर बड़े भाई ने पूछा, जब मैंने तुम्हें मारा तो तुमने रेत पर लिखा और जब मैंने तुम्हें बचाया तो पत्थर पर लिखा। ऐसा क्यों’? विवेकशील छोटे भाई ने जवाब दिया, जब हमें कोई दुख दे तो रेत पर लिखना चाहिए ताकि वो जल्दी मिट जाए, परन्तु जो हमारे लिए अच्छा करता है तो हमें उसे पत्थर पर लिखना चाहिए जो मिटने न पाए और हमेशा के लिए यादगार बन जाए।

“जिस दिन हम ये समझ जायेंगे कि... सामने वाला गलत नहीं है, सिर्फ उसकी सोच हमसे अलग है; उस दिन जीवन से सब दुःख समाप्त हो जायेंगे.......।”

- गौतम बुद्ध

हिंदी दिवस

नायक रूपेश कुमार, तकनीकी सहायता समूह

हिंदी से भारतीयता की पहचान।
आओ करें मातृभाषा का सम्मान।।

हिंदी में नौ रसों का श्रृंगार।
समृद्ध साहित्य इसमें अपार।।

हिंदी हमारी सभ्यता की संपदा।
देश की गौरवगाथा गूंजे सर्वथा।।

हिंदी को व्यवहार में लाएं।
जन-जन की इसे भाषा बनाएं।।

हिंदी मेरे देश की शान।
मेरा गर्व मेरा अभिमान।।

करें सर्वत्र हिंदी का प्रसार।
यही हिंदी-दिवस मनाने का आधार।।

मैं हिंदी हूँ

नायब सूबेदार सतीश चन्द, सीएंडसी समूह

मैं सूरदास की दृष्टि बनी, तुलसी हित चिन्मय सृष्टि बनी
मैं मीरा के पद की मिठास, रसखान के नैनों की उजास
मैं हिंदी हूँ।
मैं सूर्यकान्त की अनामिका, मैं पंत की गुंजन पल्लव हूँ
मैं हूँ प्रसाद की कामायनी, मैं ही कबीरा की हूँ वाणी
मैं हिंदी हूँ।
खुसरो की इश्क मिजाजी हूँ, मैं घनानन्द की हूँ सुजान
मैं ही रसखान के रस की खान, मैं ही भारतेन्दु का रूप महान
मैं हिंदी हूँ।
हरिवंश की हूँ मैं मधुशाला, ब्रज, अवधी, मगही की हाला
अज्ञेय मेरे हैं भग्नदूत, नागार्जुन की हूँ युगधारा
मैं हिंदी हूँ।
मैं देव की मधुरम रस विलास, मैं महादेवी की विरह प्यास
मैं ही सुभद्रा का ओजगीत, भारत के कण-कण में है वास
मैं हिंदी हूँ।
मैं विश्व पटल पर मान्य बनी, मैं जगदगुरू अभिज्ञान बनी
मैं भारत माँ की प्राणवायु, मैं आर्यवर्त अभिधान बनी
मैं हिंदी हूँ।
मैं आन, बान और शान बनी, मैं राष्ट्र का गौरव मान बनूँ
यह दो वचन आज, मैं तुम सबकी पहचान बनूँ
मैं हिंदी हूँ।

हिंदी दिवस

नायब सूबेदार सतीश चन्द, सीएंडसी समूह

माँ हिंदी तुम्हें प्रणाम
भारत माँ के भालचंद्र की
चिंदी तुम्हें प्रणाम
माँ हिंदी तुम्हें प्रणाम

सब भाषाओं की तुम जननी
नित्य-दिवस प्रातः, मध्य, तुम रजनी
सरल सदा सर्वदा शुभ अभिव्यक्ति
हिंदू हिंदी हिन्दुस्तान की शक्ति

शब्द सहज उच्चारण तुम हो
सर्व स्नेह विस्तारण तुम हो
तुम हो अन्तर प्रत्यंतर निरन्तर
तुम ही हो भूत, भविष्य, कालांतर

तुम ही हो शब्द-ध्वनि बिंदु का अंतर
जय हिंदी, जन-मानस की भाषा
तुम ही हो भारत के जन-गण की अभिलाषा
माँ हिंदी को प्रणाम।

शब्दों का संसार

पराग ग्रोवर, मानकी समूह

शब्द रचे जाते हैं।

शब्द गढ़े जाते हैं।

शब्द मढ़े जाते हैं।

शब्द लिखे जाते हैं।

शब्द पढ़े जाते हैं।

शब्द बोले जाते हैं।

शब्द टटोले जाते हैं।

शब्द खंगाले जाते हैं।

.....इस प्रकार

शब्द बनते हैं।

शब्द संवरते हैं।

शब्द सुधरते हैं।

शब्द निखरते हैं।

शब्द हंसाते हैं।

शब्द मनाते हैं।

शब्द रूलाते हैं।

शब्द मुस्कुराते हैं।

शब्द खिल-खिलाते हैं।

शब्द गुद-गुदाते हैं।

शब्द मुखर हो जाते हैं।

शब्द प्रखर हो जाते हैं।

शब्द मधुर हो जाते हैं।

.....इतना होने के बाद भी

शब्द चुभते हैं।

शब्द बिकते हैं।

शब्द घाव देते हैं।

शब्द ताव देते हैं।

शब्द लड़ाते हैं।

शब्द झगड़ते हैं।

शब्द बिगड़ते है।

शब्द बिखरते हैं।

शब्द सिहरते हैं।

.....परन्तु

शब्द कभी मरते नहीं

शब्द कभी थकते नहीं

शब्द कभी रुकते नहीं

शब्द कभी चुभते नहीं

.....अतएव

शब्दों से खेले नहीं

बिन सोचे बोले नहीं

शब्दों को मान दें

शब्दों को सम्मान दें

शब्दों पर ध्यान दें

शब्दों को पहचान दें

ऊंची-लंबी उड़ान दें

शब्दों को आत्मसात करें

उनसे उनकी बात करें

शब्दों का अविष्कार करें

गहन सार्थक विचार करें

.....क्योंकि

शब्द अनमोल हैं
जुबां से निकले बोल हैं।
शब्दों में धार है
शब्दों की महिमा अपार है।
शब्दों का विशाल भंडार है।
और
..... सच तो यह है
शब्दों
का
भी
अपना
एक संसार हैं।

शब्दों को सम्मान दें।

कोहरे से एक अच्छी बात सीखने को मिली कि जब जीवन में रास्ता न दिखाई दे तो बहुत दूर का देखने की कोशिश व्यर्थ है, एक एक कदम चलते चलो, रास्ता खुलता जाएगा।

हिंदी

पराग ग्रोवर, मानकी समूह

अपनी सी मैं भाषा हूं
जीवन की अभिलाषा हूं
सारे हिन्दुस्तान की
मैं एक परिभाषा हूं
हिंदी हूं मैं हिंदी हूं मैं.....
एक मात्र ऐसी भाषा
सर्वधर्म समभाव है।
घृणा, द्वेष, अंहकार का
होता यहां अभाव है।
स्वाभिमान संस्कार जगाती
मैं ऐसी भाषा हूं
हिंदी हूं मैं हिंदी हूं मैं.....
आस्था और परम्परा की
हिंद के इतिहास की
देती एक आधार हूं
भारत की गौरव-गाथा गाती
मैं ऐसी भाषा हूं
हिंदी हूं मैं हिंदी हूं मैं.....
संस्कृत से संस्कृति हमारी
हिंदी से हिंदुस्तान हूं
जनमानस की भाषा प्यारी
हर दिल का अभिमान हूं
भाषाओं से साक्षात्कार कराती
मैं ऐसी भाषा हूं
हिंदी हूं मैं हिंदी हूं मैं.....

आजादी का अमृत महोत्सव

श्रीकृष्ण सिंह, निदेशक सचिवालय

अमृत महोत्सव आजादी का, भारत मना रहा है।
हर पल, हर दिन विकास की, नई गाथाएं गा रहा है।।

मिटकर खुद को जिन्होंने, हमारे प्यारे वतन को संवारा।
उन सेनानियों को, सबसे पहले नमन हमारा।।

बलिदान और त्याग उन वीरों का, नया उमंग और नूतन जोश ला रहा है।
अमृत महोत्सव आजादी का, भारत मना रहा है।।

बढ़ रहे हैं प्रगति पथों पर, हम ज्ञान के सहारे।
सद्भाव और श्रम के, गुंजायमान नारे।।

जय हो जनता की, उदार मन से विज्ञान गा रहा है।
अमृत महोत्सव आजादी का, भारत मना रहा है।।

आदर से हमें, यह जग पुकारता है।
हर एक देशवासी प्रण-प्राण से, देश को वारता है।।

भाईचारा, प्रेम, समता, मन को सुना रहा है।
अमृत महोत्सव आजादी का, भारत मना रहा है।।

दुनिया हमारे देश की महानता के, नवगीत गा रही है।
यह मातृभूमि तन, मन सबको लुभा रही है।।

मनमोहक स्वरूप इसका, जादू जगा रहा है।
अमृत महोत्सव आजादी का, भारत मना रहा है।।

स्वच्छता का अभियान, हर भारतवासी ने अपनाया।
महात्मा गांधी के एक और सपने को, साकार बनाया।।

नित्य नवीन जीवन इसका, अंगड़ाई ले रहा है।
अमृत महोत्सव आजादी का, भारत मना रहा है।।

नोटबंदी के समय, आम लोगों ने भी, डिजिटल कैश को अपनाया।
सुरक्षित और सुखी जीवन की ओर, एक कदम और बढ़ाया।।

अलख ज्ञान ज्योति इसका, प्रकाश फैला रहा है।
अमृत महोत्सव आजादी का, भारत मना रहा है।।

धारा 370 कश्मीर से हटाकर, देश का मान बढ़ाया।
ऐसा करके भारत ने, भारत को और सशक्त बनाया।।

साहसिक क्षमता इसका, संसार में गौरव बढ़ा रहा है।
अमृत महोत्सव आजादी का, भारत मना रहा है।।

कोरोना से डटकर मुकाबला, हर देशवासी ने किया है।
टीका लगाकर भारत ने, सबको संबल और भयमुक्त किया है।।

विश्व टकटकी निगाहों से, हमारी ओर देख रहा है।
अमृत महोत्सव आजादी का, भारत मना रहा है।।

हमने ठाना है, पूरी दुनिया से आतंकवाद को मिटाना है।
तभी हम उस मंजिल को पा सकेगें, भारत को जगतगुरू बना सकेगें।।

आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ते कदम की प्रशंसा, जगत कर रहा है।
अमृत महोत्सव आजादी का, भारत मना रहा है।।

सपनों का भारत

रुचि देवी, तकनीकी सहायता समूह

यह भले ही मेरे विचारों के सपनों जैसा भारत होगा।
बेशक ऐसा संभव होगा, जब कोई न महाभारत होगा।।

जब श्रम के ढेरों अवसर होंगे, तो कोई न बेरोजगार होगा।
मन सभी का पावन होगा, न कोई भ्रष्टाचार होगा।।

सद्भावना होगी हर दिल में, तो श्रेष्ठ संस्कार होगा।
जब अशिक्षित कोई न रहेगा, तब बेहतर व्यवहार होगा।।

अगर बहु-बेटियां रहेंगी सुरक्षित, तो सबका कल्याण होगा।
जब शिक्षा प्रभावी होगी, बेहतर देश निर्माण होगा।।

अगर जात-पात पर लड़ेंगे-मरेंगे, देश कैसे खुशहाल होगा।
आरक्षण जैसे दंगे होंगे, माहौल खस्ताहाल होगा।।

जब कानून ज्यादा सख्त पड़ेगा, दुराचारी का ऐसा हाल होगा।
फिर गलत विचार वालों के मन में, न कोई बुरा ख्याल होगा।।

यदि सफाई का प्रण हम सब ठानें, तो गांधी जी का पूरा सपना होगा।।
फिर गंदगी से पड़े बीमार, ऐसा न कोई अपना होगा।
प्रदूषण पर पड़े पेनल्टी, वातावरण तब साफ होगा।।

गरीबों की मुफ्त दवा हो, तो एक समता का इंसाफ प्रेरक होगा।
यदि बेहतर खेल सुविधाएं होंगी, माहौल कितना होगा।।

ओलम्पिक जाके आने वाला, हर खिलाड़ी मेडल धारक होगा।।
यदि तकनीकी में होगी प्रगति, जीवन सुरक्षित और आसान होगा।
हम फिर कहलाएंगे “सोने की चिड़िया” अपना भारत और महान होगा।।

इतिहास में गुम एक संघर्ष की प्रासंगिकता

दलजीत कौर, तकनीकी सूचना केंद्र

"संघर्ष" शब्द का उच्चारण करने मात्र से ही नारी की प्रतिमूर्ति आंखों के सामने घूमने लगती है। ये कहना गलत न होगा कि संघर्ष से नारी जाति का बहुत पुराना रिश्ता है जिसको वो सदियों से ढोती आ रही है। नारी को एक वस्तु तथा पुरूष की संपत्ति समझा जाता है। पुरूष नारी को पीट सकता है, उसके मनोबल को तोड़कर रख सकता है साथ ही उसकी जान भी ले सकता है मानो कि उसे नारी के साथ यह सब करने का अघोषित अधिकार मिला हुआ है। मगर यह भी सच है कि अनेक नारियों ने हर प्रकार की विपरीत और कठिन परिस्थितियों का डट कर सामना करते हुए उन पर विजय प्राप्त की और इतिहास में अपना नाम अमर कर दिया।

आज इस लेख के द्वारा मैं एक ऐसे संघर्ष की दास्तां आपके सामने रखना चाहती हूँ जिसे हममें से बहुत कम लोगों ने सुना होगा या पढ़ा होगा और वो संघर्ष इतिहास के पन्नों में कहीं गुम हो गया है और उस संघर्ष की आज के संदर्भ में क्या प्रासंगिकता है इस पर भी विचार करेंगें।

आज जब स्त्री-आंदोलनों का एक पूरा दौर बीत चुका है और उसकी पुनर्व्याख्या भी की जा रही है, मुख्यतया स्त्री-अध्ययन की बुनियाद के रूप में भक्ति आंदोलन को रेखांकित किया जाता है। अंजल, पद्मावती (रामानंद की शिष्या) और मीरा के क्रांतिकारी स्वर इस अध्ययन का बीज माने जाते हैं। यह ठीक है कि इनके योगदान को नकारा नहीं जा सकता, पर इन्हीं सबके बीच एक आवाज उन थेरियों की भी है, जिन्होंने धारा के विपरीत बहने का सफल प्रयत्न किया। अगर उस समय की सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक और धार्मिक परिस्थितियों को ध्यान में रखकर इन थेरी गाथाओं का अध्ययन किया जाए तो निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि भारतीय संदर्भो में यही स्त्री-मुक्ति की पहली आवाज थी।

थेरी गाथा बौद्ध साहित्य का प्रमुख अंग है। बौद्ध धर्म के त्रिपिटकों में सुत्तपिटक का अलग महत्व है। सुत्तपिटक का एक भाग खुद्दक निकाय है। इसी निकाय में थेरी गाथाएं संग्रहित हैं। बुद्ध द्वारा निर्मित संघ में जो स्त्री प्रव्रज्या प्राप्त कर लेती थी वह थेरी कहलाती थी। ऐसा माना जाता है कि बुद्ध की मौसी

गौतमी अपने साथ लगभग पांच सौ स्त्रियों को लेकर प्रव्रजित हुई थी। कुछ समय बाद इन भिक्षुणियों का अलग ही संघ बन गया। संघ की 73 थेरियों की लगभग पांच सौ गाथाओं को ही थेरी गाथा कहा गया है। थेरी गाथा को खुद्दक निकाय के पंद्रह ग्रंथों में स्थान दिया गया है।

थेरियों की इन गाथाओं को स्त्रीजाति के प्रतिरोध का पहला स्वर माना जाता है जिसमें स्त्रियों की अपनी अलग दुनिया है। इनमें इनके दुखों का गान है, पीड़ा है, तड़प है, मुक्ति की चाह है तो मोक्ष प्राप्त करने की तीव्र आकांक्षा भी है। अपने बुरे कर्मों की स्वीकारोक्ति तो है ही, उसका पश्चाताप करने की उग्रता भी है। जीवन के सभी रंग इन गाथाओं में दिखाई देते हैं। इन गाथाओं के माध्यम से तत्कालीन समाज की रीतियों-कुरीतियों, आचारों-अनाचारों पर प्रकाश डाला गया है। ऐसे समय में जबकि स्त्री-लेखन को अतिश्य लेखन से दूर माना जाता है, ये गाथांए अतिशय भावात्मक न होकर वैचारिक घरातल पर खड़ी दिखाई देती हैं।

तत्कालीन भारतीय सामाजिक परिवेश में बुद्ध द्वारा स्त्रियों को संघ में प्रवेश की अनुमति देना बहुत बड़ा क्रांतिकारी कदम था। यद्यपि यह भी सत्य है कि पहले बुद्ध भी स्त्रियों के संघ में प्रवेश के खिलाफ थे और प्रारंभ में उन्होंने भी स्त्रियों को संघ में शामिल करने का निषेघ किया था। वे मानते थे कि स्त्रियों का संघ में प्रवेश उचित नहीं है, इससे संघ भ्रष्ट हो जाएगा। ऐसे समय में उनके भाई आनंद ने उनका हृदय परिवर्तन किया, तब उन्होंने अपनी मां गौतमी को संघ की पहली भिक्षुणी के रूप में दीक्षा दी। तत्कालीन विषय परिस्थितियों में बुद्ध का यह कदम समाज के साथ बहुत बड़ा विद्रोह था।

विशेष बात यह थी कि स्त्रियों द्वारा संघ में प्रवेश लेने का कोई कड़ा नियम नहीं थी। समाज के प्रत्येक वर्ग को इसमें समान रूप से भागीदारी करने की स्वतन्त्रता थी। जो स्त्री इसमें स्वेच्छा से प्रेवश लेना चाहे उसके लिए कोई बंधन नही था। वह विवाहित हो या अविवाहित, वृद्धा हो या बालिका किसी भी अवस्था में संघ में प्रवेश ले सकती थी। चाहे वह किसी भी जाति या वर्ग की हो, अमीर या गरीब, गणिका हो या वेश्या बुद्ध ने सबके लिए ज्ञान के द्वार खोल दिए। संघ में प्रव्रज्या प्राप्त स्त्रियां केवल उच्चकुल या प्रतिष्ठा प्राप्त कुलीन घरों की नहीं थी बल्कि एक बड़ा वर्ग उन स्त्रियों का भी था जो समाज के निम्न वर्ग से आती थीं। इनमें राजवंश और शाक्यकुल के साथ दास, बहेलिया, वेश्या, गणिका आदि से लेकर समाज के दीन-हीन परिवारों की महिलाएं तक संघ में शामिल थीं। संघ में

प्रवेश से उनमें नवीन आत्मविश्वास का संचार हुआ और अपना स्त्रीत्व उनके लिए गौरव का विषय बन गया। जाति, धर्म, वर्ग और लिंग के आधार पर विभाजित समाज में एक ऐसे संगठन की परिकल्पना ही आश्‍र्यचकित कर देती है जिसमें इस प्रकार की भिन्नताओं को सहज व सामान्य रूप में स्वीकारोक्ति मिली हो।

एक ऐसे समाज में जहां नारीत्व पूरी तरह से अभिशाप बन गया था और स्त्री एकमात्र भोग्या रूप में पहचानी जा रही थी, ये थेरियां मुक्ति और स्वतंत्रता की बात कर रही थीं। भिक्षुणी सुमंगल के कथन "मैं मुक्त नारी हूं। मेरी मुक्ति कितनी धन्य है" ने स्त्रियों में नई चेतना का संचार किया। भिक्षुणी सोया मानती है कि ज्ञान प्राप्ति में स्त्री होना किसी भी प्रकार से बाधक नहीं है। वह कहती है- "जब चित अच्छी तरह समाधि में लीन है, ज्ञान नित्य विद्‌यमान है और अंतर्ज्ञान पूर्वक धर्म का सम्यक दर्शन कर लिया गया है तो स्त्रीत्व इसमें हमारा क्या करेगा। "राजपुत्री सुमेधा थेरी अपने माता-पिता के विरूद्‌ध जाकर संघ में प्रवेश लेती हैं और अपने पिता से निर्भीक होकर कहती हैं - "मैं तो प्रव्रज्या ही लूंगी या अपने प्राणों को त्याग दूंगी। यही मेरा एक वरण है।"

जिस मुक्ति पर सदियों से पुरूष का आधिपत्य था वह अब स्त्रियों को भी सुलभ थी। मुक्ता थेरी बेबाकी से कहती है कि आज जाति और मरण से भी मुक्त हो गई हूं। मेरी संसार-तृष्णा ही समाप्त हो गई है। विमला भिक्षुणी वैशाली में पैदा हुई गणिका थी। पद्‌मावती और आम्रपाली नगर की गणिकाएं थीं। पूर्णिका एक दासी की पुत्री थी। सुमंगला भिक्षुणी थी। ये सभी सामाजिक विषमताओं को त्याग कर एक ही पवित्र उद्‌देश्य से प्रेरित होकर संघ में प्रवेश के कारण अलग-अलग थे। कुछ का उद्‌देश्य परम शांति की प्राप्ति था तो कुछ मोक्ष प्राप्ति के प्रति कृत-संकल्प थीं। अभी तक हिंदू-धर्म में सभी अधिकारों का भोक्ता एकमात्र पुरूष हुआ करता था। घर-परिवार से लेकर बाहर के सभी निर्णयों पर एकमात्र उसी का अधिकार था। स्त्रियों के लिए ज्ञान अर्जित करना वर्जित था। स्त्रियों का कार्यक्षेत्र घर-गृहस्थी ही माना जाता था। ऐसी सामाजिक व्यवस्था में स्त्रियों के आत्मबल की बात करना भी बेमानी हो जाता है पर इन थेरियों की गाथाओं में आत्मविश्वास से लबरेज अभिव्यक्ति दिखाई देती है। इन अभिव्यक्तियों से पहले स्त्री के स्त्रीत्व को लेकर ऐसी स्वीकारोक्ति मिलना दुर्लभ है। थेरी गाथा बुद्‌ध-साहित्य का प्रमुख अंग तो है ही, नारी मुक्ति के आंदोलन और स्त्री-विमर्श के लिए भी महत्वपूर्ण ग्रंथ है। भारतीय साहित्य में स्त्री-अस्तित्व के स्वातंत्र्य की इतनी बेबाक स्वीकृति इससे

पहले कहीं नही दिखाई देती। स्त्री कोई पराधीन जीव नहीं बल्कि स्वाधीनता की चेतना से परिभाषित है। इन थेरियों ने जिस साहस के साथ संकीर्ण मानसिकता से ग्रस्त समाज के विरूद्ध आवाज उठाई वह आज भी प्रेरणास्त्रोत है। थेरी गाथाएं तत्कालीन समाज में स्त्री की स्थिति को समझने के लिए महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक दस्तावेज है जो स्त्री को जगत में न केवल मानसिक और शारीरिक बल्कि बौद्धिक और आर्थिक गुलामी के प्रति विद्रोह की शिक्षा देती हैं। ये थेरी गाथाएं भारतीय समाज की शोषित और पीड़ित स्त्रियों की उन्मुक्त कथा है। इतिहास गवाह है कि आज तक जिस किसी ने भी समाज की चली आ रही व्यवस्था, उसके मूल्यों और परम्पराओं के विरूद्ध आवाज उठाई है, उसे क्रांतिकारी कहा गया है। इस दृष्टि से ये थेरियां भी क्रांतिकारी कही जा सकती हैं। यह संघर्ष गाथा आज भले इतिहास में कहीं गुम हैं, पर यह निश्चित है कि आने वाले समय में जब कभी स्त्री संघर्ष की बात की जाएगी, इन थेरियों का ज़िक्र अवश्य किया जाएगा क्योंकि यही विद्रोह की वह पहली दबी आवाज़ थी जिसने आज विमर्श का रूप ले लिया है।

यदि आज के संदर्भ में थेरी संघर्ष की बात की जाए तो वो निरंतर अग्रसर है। चाहे वो इतिहास के पन्नों में गुम हो, पर उसकी प्रतिध्वनि आज भी हमारे देश के हर कोने, हर जगह विद्यमान है क्योंकि जो प्रताड़ना, जो तिरस्कार नारी ने प्राचीन काल में, मध्य काल में और आधुनिक काल में सहा वो आज भी हो रहा है। जिसको तोड़ने के लिए उसका संघर्ष आज भी जारी है। परंतु ये बात हज़म नहीं होती कि नारी को ही अपनी पहचान बनाने के लिए संघर्ष क्यों करना पड़ता है। क्यूं स्त्रियों के लिए ही असुरक्षित वातावरण है। हमेशा से ये माना गया है कि स्त्रियां शारीरिक रूप से पुरूषों से कमज़ोर है पर मेरा मन ये नहीं मानता। जो स्त्री सृजन की शक्ति रखती है वो कमज़ोर कैसे हो सकती है, पर समाज के ठेकेदार और पुरूष प्रधान-प्रवृत्ति नारी को रोकती है आगे बढ़ने से.......

यह कहना गलत न होगा कि नारी चाहे किसी भी देश की हो उसका संघर्ष बरकरार है। पश्चिमी देशों की नारियों की स्थिति ही ठीक-ठाक है, जहां तक मुस्लिम देशों की नारियां की दशा है, वो बहुत ही दयनीय है। ये बात मेरे जहन में इसलिए आई कि आजकल अफगानिस्तान की चर्चा हर जगह है। अफगानिस्तान में जो हलचल चल रही है, उसमें महिलाएं ही पिस रही हैं। फिर ये कहना कि नारी ने बहुत उन्नति कर ली है गलत होगा। नारी तो नारी ही है चाहे वो किसी भी देश

की क्यों न हो। उनकी स्थिति तो भारतीय नारी की स्थिति से कहीं ज्यादा भयावह है। भारत में पनाह लेने वाली कई महिलाएं से मैंने बात की, उनकी बातें सुन कर रोगटें खड़े हो जाते हैं। तालिबान द्वारा महिलाओं पर अत्याचार की कहानी दोहराती ये महिलाएं कहती हैं कि तालिबान के लोग माता-पिता के सामने बेटियों को घर से अगवा कर ले जाते हैं और जबरजस्ती शादी करते हैं, अगर कोई महिला अपने भाई के साथ घूम रही हो तो उसे सड़क पर मारते हैं। मुझे लगता है कि यूएनएचआरसी (UNHRC) को इसका संज्ञान लेना चाहिए। हमें महिला होने के नाते **ME TOO** की तरह कोई ऐसा ही अभियान चलाना चाहिए ताकि वहां की महिलाओं को भी नारीत्व का सम्मान मिल सके। भारत की नारी की दशा में शायद इसलिए परिवर्तन आया है कि उसने शुरू से अन्याय के खिलाफ आवाज उठाई है। चाहे वो बुद्ध कालीन हो, प्राचीन भारत हो, मध्यकालीन भारत हो या आधुनिक काल संघर्ष अभी भी जारी है। इतिहास में संघर्ष कभी गुम नहीं होता। दबी-दबी आवाज़ो में उबर ही जाता है.....

दूसरों को दण्ड देना सहज है, किन्तु उन्हें क्षमा करना और उनकी भूल सुधारना अत्यधिक कठिन कार्य है।

- वर्धमान महावीर

सपने वो नहीं जो आप सोते हुए देखते हैं, सपने वो होते हैं जो आपको सोने नहीं देते।

- डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम

राजभाषा नियम 1976

राजभाषा निमय 1976 के महत्वपूर्ण नियमः-

नियम 5 - हिंदी में प्राप्त पत्रादि के उत्तर केंद्रीय सरकार के कार्यालयों से हिंदी में दिए जाएंगे।

नियम 6 – राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा 3(3) में विनिर्दिष्ट सभी दस्तावेजों के लिए हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं का प्रयोग किया जाएगा और ऐसे दस्तावेजों पर हस्ताक्षर करने वाले व्यक्तियों का यह उत्तरदायित्व होगा कि वे यह सुनिश्चित कर लें कि ऐसे दस्तावेज हिंदी एवं अंग्रेजी दोनों में ही तैयार किए जाएं।

नियम 7 - कोई कर्मचारी आवेदन, अपील या अभ्यावेदन हिंदी या अंग्रेजी में कर सकता है। यदि कोई आवेदन, अपील या अभ्यावेदन हिंदी में किया गया हो या उस पर हिंदी में हस्ताक्षर किए गए हों तब उसका उत्तर हिंदी में दिया जाएगा।

नियम 8 (1) कोई कर्मचारी किसी फाइल पर टिप्पण या कार्यवृत्त हिंदी या अंग्रेजी में लिख सकता है और उससे यह अपेक्षा नहीं की जाएगी कि वह उसका अनुवाद दूसरी भाषा में प्रस्तुत करे।

(2) केंद्रीय सरकार का कोई भी कर्मचारी, जो हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान रखता है, हिंदी में किसी दस्तावेज के अंग्रेजी अनुवाद की मांग तभी कर सकता है, जब वह दस्तावेज विधिक या तकनीकी प्रकृति का है, अन्यथा नहीं।

(3) यदि यह प्रश्न उठता है कि कोई विशिष्ट दस्तावेज विधिक या तकनीकी प्रकृति का है या नहीं तो विभाग या कार्यालय का प्रधान उसका विनिश्चिय करेगा।

नियम 9 **हिंदी में प्रवीणता**- यदि किसी कर्मचारी ने मैट्रिक परीक्षा या उसकी समतुल्य उससे उच्चतर कोई परीक्षा हिंदी के माध्यम से उत्तीर्ण कर ली है, या स्नातक परीक्षा में अथवा स्नातक परीक्षा की समतुल्य या उससे उच्चतर किसी अन्य परीक्षा में हिंदी को एक वैकल्पिक विषय के रूप में लिया था, या यदि वह इन नियमों के उपाबद्ध प्रारूप में यह घोषणा करता है कि उसे हिंदी में प्रवीणता प्राप्त है, तो उसके बारे में यह समझा जाएगा कि उसने हिंदी में प्रवीणता प्राप्त कर ली है।

नियम 10 (1) **हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान-** यदि किसी कर्मचारी ने मैट्रीक परीक्षा या उसके समकक्ष या उससे उच्चतर परीक्षा हिंदी विषय के साथ उत्तीर्ण की है; अथवा केंद्रीय सरकार की हिंदी शिक्षण योजना के अंतर्गत आयोजित प्राज्ञ परीक्षा या उस सरकार द्वारा किसी विशिष्ट वर्ग के पदों के संबंध में निर्धारित कोई निम्नस्तर परीक्षा उत्तीर्ण की है; अथवा केंद्रीय सरकार द्वारा इस निमित विनिर्धारित कोई अन्य परीक्षा उत्तीर्ण कर ली है; या यदि वह यह घोषणा करता है कि उसने ऐसा ज्ञान प्राप्त कर लिया है, तो उसके बारे में यह समझा जाएगा कि उसे हिंदी में कार्य में कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त है।

(2) यदि केंद्रीय सरकार के किसी कार्यालय में कार्य करने वाले कर्मचारियों/अधिकारियों में से अस्सी प्रतिशत ने हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लिया है तो उस कार्यालय के कर्मचारियों के बारे में सामान्यतया यह समझा जाएगा कि उन्होंने हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लिया है।

(4) केंद्रीय सरकार के जिन कार्यालयों के अस्सी प्रतिशत कर्मचारियों/अधिकारियों ने हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लिया है, उन कार्यालयों के नाम राजपत्र में अधिसूचित किए जाएंगे।

नियम 11 (1) केंद्रीय सरकार के कार्यालयों से संबंधित सभी मैनुअल, संहिताएं और प्रकिया संबंधी अन्य साहित्य हिंदी और अंग्रेजी में द्विभाषिक रूप में यथास्थिति, मुद्रित या साइक्लोस्टाइल किया जाएगा और प्रकाशित किया जाएगा।

(2) केंद्रीय सरकार के किसी कार्यालय में प्रयोग किए जाने वाले रजिस्टरों के प्रारूप और शीर्षक हिंदी अंग्रेजी में होंगे।

(3) केंद्रीय सरकार के किसी कार्यालय में प्रयोग के लिए सभी नामपट्ट, सूचनापट्ट, पत्रशीर्ष और लिफाफों पर उत्कीर्ण लेख तथा लेखन सामग्री की अन्य मदें हिंदी और अंग्रेजी में लिखी जाएंगी, मुद्रित या उत्कीर्ण होंगी।

नियम 12 - केंद्रीय सरकार के प्रत्येक कार्यालय के प्रशासनिक प्रधान का यह उत्तरदायित्व होगा कि वह यह सुनिश्चित करें कि अधिनियम और उसके अधीन जारी किए गए निदेशों का पालन समुचित रूप से हो रहा है और इस प्रयोजन के लिए उपयुक्त और प्रभावकारी जांच के लिए उपाय किए गए हैं।

केंद्रीय सरकार राजभाषा अधिनियम और इन नियमों के उपबन्धों के सम्यक् अनुपालन के लिए अपने कर्मचारियों और कार्यालयों को समय-समय पर आवश्यक निर्देश जारी कर सकती है।

वर्ष 2021 में हिंदी पखवाड़े के अंतर्गत आयोजित प्रतियोगिताओं के परिणाम

1. हिंदी काव्य-पाठ प्रतियोगिता

प्रथम पुरस्कार	श्री अरविंद कुमार, आशुलिपिक 'डी', प्रशासन समूह	3000/-रु0
द्वितीय पुरस्कार	सूबेदार उमेश चन्द्र वर्मा, प्रशासन (स्थापना)	2000/-रु0
तृतीय पुरस्कार	श्री श्रीकृष्ण सिंह, व्यैक्तिक सहायक, निदेशक सचिवालय	1500/-रु0
प्रोत्साहन पुरस्कार-1	श्री सुर्य मोहन झा सहायक अनुभाग अधिकारी, मानकी समूह	1000/-रु0
प्रोत्साहन पुरस्कार-2	श्री महेश कुमार जैन कनिष्ठ तकनीकी अधिकारी(एस), मानकी समूह	1000/-रु0
	कुल	8500/-रु0

2. हिंदी निबंध प्रतियोगिता

प्रथम पुरस्कार	श्री मनोज कुमार, आशुलिपिक 'डी', टीएसजी	3000/-रु0
द्वितीय पुरस्कार	श्री रमेश चंद्र भाटिया, सहा. अभियंता(गु.आ.), मानकी	2000/-रु0
तृतीय पुरस्कार	श्रीमती रूचि देवी, बहु कार्य कर्मचारी, टी एस जी	1500/-रु0
प्रोत्साहन पुरस्कार-1	श्री अंकित शिवहरे, डीईओ 'बी', सी एंड सी	1000/-रु0
प्रोत्साहन पुरस्कार-2	सार्जेंट संजय कुमार राय, सी एंड सी	1000/-रु0
	कुल	8500/-रु0

3. नोटिंग/ड्राफ्टिंग प्रतियोगिता

हिंदी भाषी	प्रथम पुरस्कार	श्री सुनील कुमार सहायक अनुभाग अधिकारी, विविध	3000/-रु0
	द्वितीय पुरस्कार	हवलदार मांगीलाल, निदेशक सचिवालय	2000/-रु0
	तृतीय पुरस्कार	श्री विजय कुमार व.सचिवालय सहायक, प्रशासन (स्था.)	1500/-रु0
	प्रोत्साहन पुरस्कार-1	हवलदार सुनील चाहर, प्रशासन (स्था.)	1000/-रु0
	प्रोत्साहन पुरस्कार-2	श्री जयपाल सिंह सहायक अभियंता (गु.आ.), सी एंड सी	1000/-रु0
		कुल	8500/-रु0
अन्य भाषा-भाषी	प्रथम पुरस्कार	जे.डब्ल्यू.ओ. मनतोष धर, टी एस जी	3000/-रु0
	द्वितीय पुरस्कार	हवलदार सी रंजीत कुमार, टी एस जी	2000/-रु0
	तृतीय पुरस्कार	श्री अन्वेष बाबू मेडिदा डीईओ 'बी', डीएनसी	1500/-रु0
	प्रोत्साहन पुरस्कार-1	श्री निशीत सरदार सहायक अभियंता (गु.आ.), मानकी	1000/-रु0
	प्रोत्साहन पुरस्कार-2	श्री गोपाल लामा अनुभाग अधिकारी, प्रशासन समूह	1000/-रु0
		कुल	8500/-रु0

4. हिंदी श्रुतलेख प्रतियोगिता

प्रथम पुरस्कार	श्री सुबोध कुमार, बहु कार्य कर्मचारी, सी एस जी	3000/-रु0
द्वितीय पुरस्कार	श्री पवन कुमार, बहु कार्य कर्मचारी, भण्डार	2000/-रु0
तृतीय पुरस्कार	श्री अंकित कुमार सिंह, बहु कार्य कर्मचारी, निदेशक सचिवालय	1500/-रु0
प्रोत्साहन पुरस्कार-1	श्री कृष्ण चन्द, बहु कार्य कर्मचारी, प्रशासन (स्थापना)	1000/-रु0
प्रोत्साहन पुरस्कार-2	श्री आजाद सिंह, बहु कार्य कर्मचारी, तकनीकी समन्वय	1000/-रु0
	कुल	8500/-रु0

5. हिंदी अनुवाद प्रतियोगिता

प्रथम पुरस्कार	श्री राजेश रंजन, उप-निदेशक, मानकी	3000/-रु0
द्वितीय पुरस्कार	श्री संजय कुमार पुण्डीर, कनिष्ठ तकनीकी अधिकारी (एस), मानकी	2000/-रु0
तृतीय पुरस्कार	श्री अमित कुमार चौहान सहायक अनुभाग अधिकारी, प्रशासन (वित्त)	1500/-रु0
प्रोत्साहन पुरस्कार-1	सुश्री पल्लवी मंगला, बहु कार्य कर्मचारी, मानकी	1000/-रु0
प्रोत्साहन पुरस्कार-2	श्री पराग ग्रोवर, सहायक अभियंता (गु.आ.), मानकी	1000/-रु0
	कुल	8500/-रु0

6. वार्षिक पत्रिका "रक्षा मानकी दर्पण" में सर्वश्रेष्ठ रचनाओं के लिए पुरस्कार

क्र. सं.	पुरस्कार	राशि	लेख/कविता/कहानी का नाम	अधिकारी/कर्मचारी का नाम
1.	प्रथम	3000/-	अक्षय ऊर्जा स्त्रोत एवं आवश्यकता	सार्जेन्ट निर्मल कुमार जोशी रक्षा मानकीकरण सेल, देहरादून
2.	द्वितीय	2000/-	इतिहास में गुम एक संघर्ष की प्रासंगिकता	श्रीमती दलजीत कौर उप-निदेशक, टी आई सी मानकीकरण निदेशालय
3.	तृतीय	1500/-	भारतीय संगीत - एक परिचय	श्री श्रीकुमार सी रक्षा मानकीकरण सेल, आवड़ी
4.	चतुर्थ	1000/-	विकास बन रहा है प्राकृतिक आपदाओं का कारण?	श्रीमती शीना ग्रोवर कनिष्ठ सचिवालय सहायक सी एंड सी समूह मानकीकरण निदेशालय
5.	पंचम	1000/-	प्रकृति से छेड़छाड़ का परिणाम रहस्यमय रोग	हवलदार रामजी यादव रक्षा मानकीकरण सेल, आवड़ी

हिंदी के प्रयोग के लिए वर्ष 2021-2022 का वार्षिक कार्यक्रम

क्र.सं.	कार्य विवरण	"क" क्षेत्र	"ख" क्षेत्र	"ग" क्षेत्र
1.	हिंदी में मूल पत्राचार (तार, बेतार, टेलेक्स, फैक्स, आरेख, ई-मेल आदि सहित)	1. 'क' क्षेत्र (उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, बिहार, छत्तीसगढ़, झारखंड, मध्य प्रदेश, राजस्थान हरियाणा, अंडमान व निकोबार द्वीप समूह) से 'क' क्षेत्र को **100 प्रतिशत** 2. 'क' क्षेत्र से 'ख' क्षेत्र को **100 प्रतिशत** 3. 'क' क्षेत्र से 'ग' क्षेत्र को **65 प्रतिशत** 4. 'क' क्षेत्र से 'क' क्षेत्र व 'ख' क्षेत्र के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति को **100 प्रतिशत**	1. 'ख' क्षेत्र (गुजरात, महाराष्ट्र, पंजाब, चंडीगढ़) से 'क' क्षेत्र को **90 प्रतिशत** 2. 'ख' क्षेत्र से 'ख' क्षेत्र को **90 प्रतिशत** 3. 'ख' क्षेत्र से 'ग' क्षेत्र को **55 प्रतिशत** 4. 'ख' क्षेत्र से 'क' क्षेत्र व 'ख' क्षेत्र के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति को **90 प्रतिशत**	1. 'ग' क्षेत्र ('क' एवं 'ख' क्षेत्र में आने वाले राज्यों एवं द्वीप समूह को छोड़कर अन्य सभी राज्य व केन्द्रशासित प्रदेश) से 'क' क्षेत्र को **55 प्रतिशत** 2. 'ग' क्षेत्र से 'ख' क्षेत्र को **55 प्रतिशत** 3. 'ग' क्षेत्र से 'ग' क्षेत्र को **55 प्रतिशत** 4. 'ग' क्षेत्र से 'क' व 'ख' क्षेत्र के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति को **55 प्रतिशत**
2.	हिंदी में प्राप्त पत्रों का उत्तर हिंदी में दिया जाना	**100 प्रतिशत**	**100 प्रतिशत**	**100 प्रतिशत**
3.	हिंदी में टिप्पण	**75 प्रतिशत**	**50 प्रतिशत**	**30 प्रतिशत**
4.	हिंदी माध्यम से प्रशिक्षण कार्यक्रम	**70 प्रतिशत**	**60 प्रतिशत**	**30 प्रतिशत**
5.	हिंदी में डिक्टेशन/की बोर्ड पर सीधे टंकण	**65 प्रतिशत**	**55 प्रतिशत**	**30 प्रतिशत**
6.	हिंदी प्रशिक्षण (भाषा, टंकण, आशुलिपि)	**100 प्रतिशत**	**100 प्रतिशत**	**100 प्रतिशत**
7.	द्विभाषी प्रशिक्षण सामग्री तैयार करना	**100 प्रतिशत**	**100 प्रतिशत**	**100 प्रतिशत**
		राजभाषा संबंधी बैठकें		
8.	राजभाषा कार्यान्वयन समिति		वर्ष में 04 बैठकें (प्रति तिमाही एक बैठक)	
9.	नगर राजभाषा समिति		वर्ष में 02 बैठकें (प्रति छमाही एक बैठक)	

मानकीकरण निदेशालय हिंदी पखवाड़ा 2020

पुरस्कार वितरण समारोह

राजभाषा पुरस्कार वितरण समारोह - 2020

एयर कमोडोर जे. के. नायक, निदेशक

एयर कमोडोर जे. के. नायक, निदेशक का संबोधन

निदेशक एवं उपस्थित अधिकारी एवं

एयर कमोडोर जे. के. नायक, निदेशक का संबोधन

उपस्थित अधिकारी एवं कर्मचारीगण

मानकीकरण निदेशालय हिंदी पखवाड़ा 2020

पुरस्कार वितरण समारोह

निदेशक एवं उपस्थित अधिकारी एवं कर्मचारीगण

श्रीमती अनीता सिंह (रा.भा.) का संबोधन

उपस्थित अधिकारीगण

उपस्थित अधिकारीगण

उपस्थित अधिकारी एवं कर्मचारीगण

निदेशक एवं उपस्थित अधिकारी एवं कर्मचारीगण

मानकीकरण निदेशालय हिंदी पखवाड़ा 2020

पुरस्कार वितरण समारोह

श्रीमती अनीता सिंह (रा.भा.) का संबोधन

निदेशक महोदय द्वारा पत्रिका का विमोचन

निदेशक महोदय द्वारा पत्रिका का विमोचन

निदेशक महोदय द्वारा पत्रिका का विमोचन

'चल वैजयंती' विजेता 'प्रशासन समूह'

'चल वैजयंती' विजेता 'प्रशासन समूह'

मानकीकरण निदेशालय हिंदी पखवाड़ा 2020

पुरस्कार वितरण समारोह

निदेशक एवं उपस्थित कर्मचारीगण

'चल वैजयंती' विजेता 'प्रशासन समूह'

निदेशक एवं उपस्थित अधिकारी एवं

उपस्थित अधिकारी एवं कर्मचारीगण

पुरस्कार विजेता श्री कमल कुमार

उपस्थित कर्मचारीगण

मानकीकरण निदेशालय हिंदी पखवाड़ा 2020

पुरस्कार वितरण समारोह

पुरस्कार विजेता सार्जेंट संजय कुमार राय

पुरस्कार विजेता जे.डब्ल्यू.ओ. मंतोष धर

पुरस्कार विजेता हवलदार राजेश झाझड़िया

पुरस्कार विजेता सूबेदार सतीश चंद

पुरस्कार विजेता सूबेदार सुनिल कुमार

पुरस्कार विजेता सूबेदार उमेश चंद वर्मा

मानकीकरण निदेशालय हिंदी पखवाड़ा 2020

पुरस्कार वितरण समारोह

पुरस्कार विजेता श्रीमती दलजीत कौर

पुरस्कार विजेता श्री ई निरंजन बाबु

पुरस्कार विजेता श्री अमित कुमार चौहान

पुरस्कार विजेता श्री मनोज कुमार

पुरस्कार विजेता हवलदार सौरभ कुमार

पुरस्कार विजेता श्रीमती रुचि देवी

मानकीकरण निदेशालय हिंदी पखवाड़ा 2020

पुरस्कार वितरण समारोह

पुरस्कार विजेता श्री कृष्ण चन्द

पुरस्कार विजेता श्री अंकित कुमार सिंह

पुरस्कार विजेता श्री पवन कुमार

पुरस्कार विजेता श्री गौरी शंकर

उपस्थित अधिकारी एवं कर्मचारीगण

निदेशक एवं उपस्थित अधिकारी एवं

INDIA

मानकीकरण निदेशालय

हिंदी पखवाड़ा शुभारंभ-2021

हिंदी पखवाड़ा शुभारंभ-2021

हिंदी पखवाड़ा शुभारंभ-2021

निदेशक महोदय का पौधा-भेंट से स्वागत

कमोडोर गोपाल आर वाणी, निदेशक का

उपस्थित अधिकारी एवं कर्मचारीगण

उपस्थित अधिकारी एवं कर्मचारीगण

मानकीकरण निदेशालय

हिंदी पखवाड़ा शुभारंभ-2021

निदेशक महोदय का संबोधन

उपस्थित कर्मचारीगण

उपस्थित अधिकारी एवं कर्मचारीगण

उपस्थित अधिकारीगण

श्रीमती अनीता सिंह, सहा. निदे. (रा.भा.) का संबोधन

उपस्थित अधिकारीगण

मानकीकरण निदेशालय

हिंदी पखवाड़ा शुभारंभ-2021

निदेशक महोदय का संबोधन

उपस्थित अधिकारीगण

निदेशक एवं अधिकारीगण

उपस्थित अधिकारीगण

श्रीमती अनीता सिंह (रा.भा.) का संबोधन

उपस्थित अधिकारीगण

मानकीकरण निदेशालय

हिंदी पखवाड़ा शुभारंभ-2021

निदेशक एवं अधिकारीगण

निदेशक महोदय का संबोधन

उपस्थित अधिकारी एवं कर्मचारीगण

उपस्थित अधिकारीगण

उपस्थित कर्मचारीगण

उपस्थित अधिकारीगण

मानकीकरण निदेशालय

हिंदी पखवाड़ा-2021: नोटिंग एवं ड्राफ्टिंग प्रतियोगिता (16.09.2021)

प्रतियोगिता के प्रतिभागी

प्रतियोगिता के प्रतिभागी

प्रतियोगिता के प्रतिभागी

प्रतियोगिता के प्रतिभागी

प्रतियोगिता के प्रतिभागी

प्रतियोगिता के प्रतिभागी

मानकीकरण निदेशालय

हिंदी पखवाड़ा-2021: नोटिंग एवं ड्राफ्टिंग प्रतियोगिता (16.09.2021)

प्रतियोगिता के प्रतिभागी

प्रतियोगिता के प्रतिभागी

प्रतियोगिता के प्रतिभागी

प्रतियोगिता के प्रतिभागी

निदेशक महोदय, अधिकारीगण एवं प्रतियोगिता के प्रतिभागी

निदेशक महोदय, अधिकारीगण एवं प्रतियोगिता के प्रतिभागी

मानकीकरण निदेशालय

हिंदी पखवाड़ा-2021: निबंध प्रतियोगिता (20.09.2021)

निदेशक महोदय, अधिकारीगण एवं प्रतियोगिता के प्रतिभागी

निदेशक महोदय, अधिकारीगण एवं प्रतियोगिता के प्रतिभागी

निदेशक महोदय, अधिकारीगण एवं प्रतियोगिता के प्रतिभागी

प्रतियोगिता के प्रतिभागी

निदेशक महोदय, अधिकारीगण एवं प्रतियोगिता के प्रतिभागी

मानकीकरण निदेशालय

हिंदी पखवाड़ा-2021: अनुवाद प्रतियोगिता (22.09.2021)

प्रतियोगिता के प्रतिभागी

प्रतियोगिता के प्रतिभागी

प्रतियोगिता के प्रतिभागी

प्रतियोगिता के प्रतिभागी

प्रतियोगिता के प्रतिभागी

प्रतियोगिता के प्रतिभागी

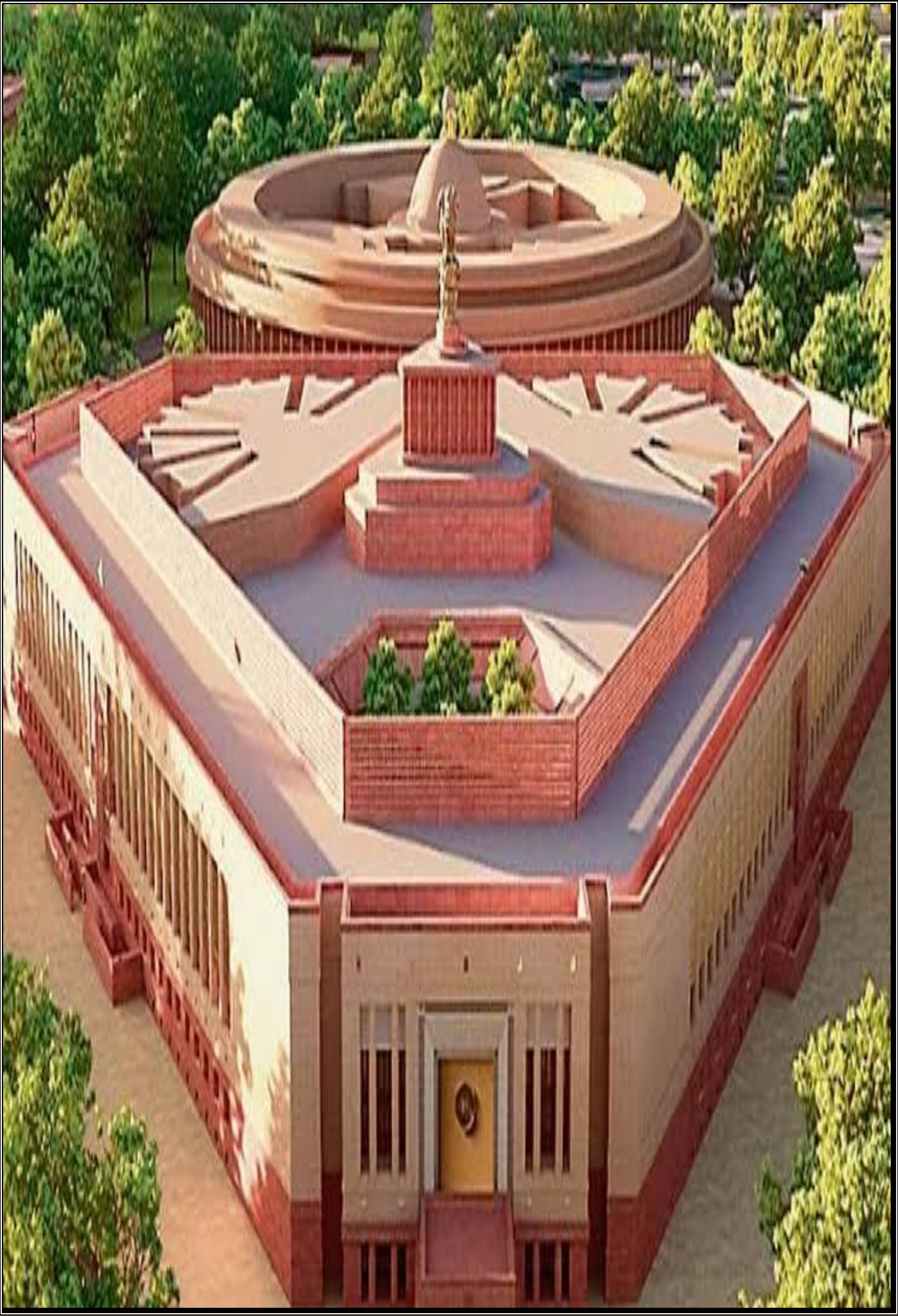

मानकीकरण निदेशालय

हिंदी पखवाड़ा-2021: काव्य-पाठ प्रतियोगिता (24.09.2021)

कमोडोर गोपाल आर. वाणी, निदेशक

काव्य-पाठ प्रतियोगिता का निर्णायक मंडल

काव्य-पाठ प्रतियोगिता का निर्णायक मंडल

श्री कृष्ण सिंह, व्यैक्तिक सहायक

श्री अरविन्द कुमार, आशुलिपिक 'डी'

श्री महेश कुमार जैन, क. तकनीकी अधिकारी

मानकीकरण निदेशालय

हिंदी पखवाड़ा-2021: काव्य-पाठ प्रतियोगिता (24.09.2021)

निदेशक महोदय एवं कर्मचारीगण

श्री सुर्य मोहन झा, सहायक अनुभाग अधिकारी

श्री दयाचंद, वरिष्ठ सचिवालय सहायक

सूबेदार उमेश चंद्र वर्मा

प्रतियोगिता में उपस्थित कर्मचारीगण

प्रतियोगिता में उपस्थित कर्मचारीगण

मानकीकरण निदेशालय

हिंदी पखवाड़ा-2021: श्रुतलेखन प्रतियोगिता (28.09.2021)

प्रतियोगिता के प्रतिभागी

प्रतियोगिता के प्रतिभागी

प्रतियोगिता के प्रतिभागी

प्रतियोगिता के प्रतिभागी

अधिकारीगण एवं प्रतियोगिता के प्रतिभागी

प्रतियोगिता के प्रतिभागी

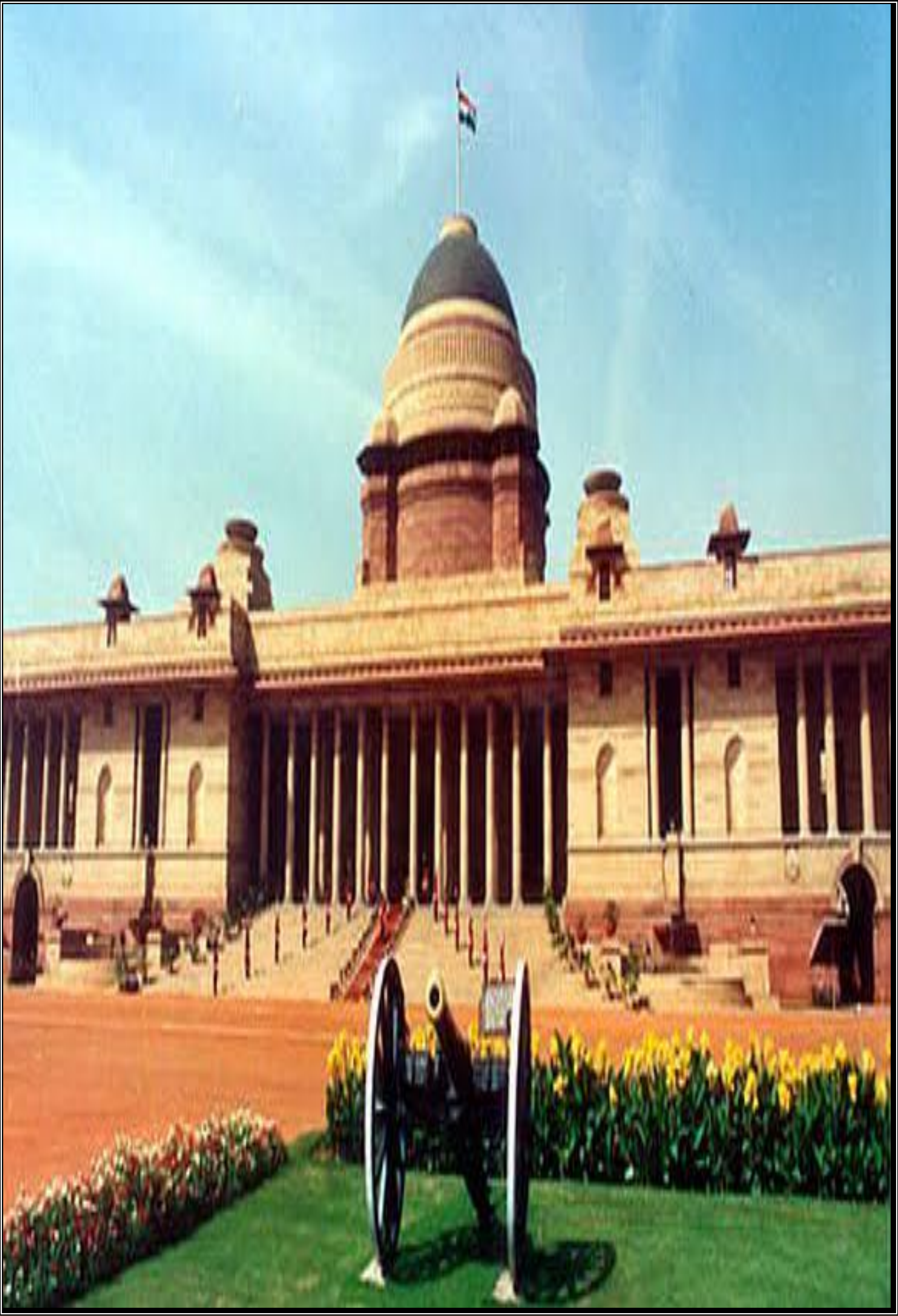

हिमाद्रि तुंग श्रृंग से प्रबुद्ध शुद्ध भारती,
स्वयं प्रभा समुज्जवला स्वतंत्रता पुकारती।

अमर्त्य वीर पुत्र हो, दृढ-प्रतिज्ञा सोच लो,
प्रशस्त पुण्य पंथ है, बढ़े चलो, बढ़े चलो।

असंख्य कीर्ति-रश्मियां विकीर्ण दिव्य दाह-सी,
सपूत मातृभूमि के - रूको न शूर साहसी।

अराति सैन्य सिंधु में, सुबाड़वाग्नि से जलो,
प्रवीर हो जयी बनों, बढ़े चलो, बढ़े चलो।

\- जय शंकर प्रसाद